इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
पर्यटन एवं आतिथ्य प्रबंध विद्यापीठ

बी.टी.एम.सी.-131
पर्यटन का इतिहास-I

खंड

2

पर्यटन : सांस्कृतिक विरासत

इकाई 4
भारत के धर्म 5

इकाई 5
तीर्थस्थल 21

इकाई 6
समुद्रतटीय और द्वीपीय आरामगाह : कोवलम और लक्षद्वीप 33

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें 53

इस खंड के लिए गतिविधियाँ 54

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

पाठ निर्माण दल*

इकाई 1–3 (टी.एस.–01)	इकाई 4–6 (टी.एस.–1 और टी.एस.–2)	इकाई 18–20 (टी.एस–1 और टी.एस.'6)
प्रो.कपिल कुमार	प्रो.कपिल कुमार	प्रो.कपिल कुमार
प्रो. ए.आर. खान	प्रो. ए.आर. खान	प्रो. ए.आर. खान
प्रो. स्वराज बासु	प्रो. स्वराज बासु	प्रो. स्वराज बासु
डॉ. अजय मोहुकर इतिहास संकाय सदस्य इग्नू	डॉ. अजय मोहुकर इतिहास संकाय सदस्य इग्नू	डॉ. अजय मोहुकर इतिहास संकाय सदस्य इग्नू

* बी.टी.एम.सी–131 पर्यटन एवं आतिथ्य प्रबंध विद्यापीठ (एस.ओ.टी.एच.एस.एम.) के तीन पाठ्यक्रमों से लिया गया है जिनके नाम इस प्रकार हैं– टी.एस.–1, टी.एस.–2, टी.एस.–6

पाठ निर्माण एवं अनुकूलन दल

प्रो. जितेन्द्र श्रीवास्तव, निदेशक, एस.ओ.टी.एच.एस.एम **(अध्यक्ष)**
डॉ. पारोमिता शुक्लाबैद्या, सहायक प्राध्यापक, एस.ओ.टी.एच.एस.एम
डॉ. सोनिया शर्मा, सहायक प्राध्यापक, एस.ओ.टी.एच.एस.एम
डॉ. तांगजाखोम्बी आकोइजम, सहायक प्राध्यापक, एस.ओ.टी.एच.एस.एम
डॉ. अरविन्द कुमार दुबे, सहायक प्राध्यापक, एस.ओ.टी.एच.एस.एम **(संपादक)**

कार्यक्रम संयोजक

डॉ. अरविन्द कुमार दुबे
सहायक प्राध्यापक, एस.ओ.टी.एच.एस.एम

पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ. सोनिया शर्मा, सहायक प्राध्यापक, एस.ओ.टी.एच.एस.एम
डॉ. अरविन्द कुमार दुबे, सहायक प्राध्यापक, एस.ओ.टी.एच.एस.एम

खंड संयोजक

डॉ. सोनिया शर्मा, सहायक प्राध्यापक, एस.ओ.टी.एच.एस.एम

संकाय सदस्य

प्रो. जितेन्द्र श्रीवास्तव, निदेशक, एस.ओ.टी.एच.एस.एम (अध्यक्ष)
डॉ. पारोमिता शुक्लाबैद्या, सहायक प्राध्यापक, एस.ओ.टी.एच.एस.एम
डॉ. अरविन्द कुमार दुबे, सहायक प्राध्यापक, एस.ओ.टी.एच.एस.एम
डॉ. हरकीरत बैंस, सह–प्राध्यापक, एस.ओ.टी.एच.एस.एम
डॉ. सोनिया शर्मा, सहायक प्राध्यापक, एस.ओ.टी.एच.एस.एम
डॉ. तांगजाखोम्बी आकोइजम, सहायक प्राध्यापक

सामग्री निर्माण दल

श्री तिलक राज
सहायक कुल सचिव (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी.,इग्नू, नई दिल्ली

श्री यशपाल
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी.,इग्नू, नई दिल्ली

वर्तनी शोधन
डॉ. सुरेश कुमार गोहे
टंकण सहायक
श्रीमती कौशल्या सैनी

सितम्बर, 2019
© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, 2019
ISBN : 978-93-89499-31-5
सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ (चक्र मुद्रण) द्वारा या अन्यथा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के बारे में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के मैदान गढ़ी नई, दिल्ली – 110068 स्थित कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली की ओर से कुल सचिव एम.पी.डी.डी इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
लेज़र टाइपसेटर : टेसामीडिया एण्ड कंप्यूटर्स, सी–206, ए.एफ.ई.2, जामिया नगर, नई दिल्ली
मुद्रक : मैसर्स ए–वन ऑफसेट प्रिंटर्स, 5/34, कीर्ति नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली–110015 द्वारा मुद्रित।

खंड 2 पर्यटनः सांस्कृतिक विरासत

यह स्वीकार किया गया तथ्य है कि हमारे देश में आज अधिकतर पर्यटन प्रोत्साहन मुख्य रूप से अपनी सांस्कृतिक विरासत से संबंधित है, जिसमें तीन या अधिक सहस्राब्दियों से चली आ रही अबाध परंपरा है।

यह खंड पर्यटन के दृष्टिकोण से भारत की सांस्कृतिक विरासत से संबंधित है। इस विरासत के एक महत्वपूर्ण पहलू का वर्णन करते हुए विषय को तीन इकाइयों में विभाजित किया गया है।

इकाई 4 में भारत के धर्मों की चर्चा की गई है। इसके तहत आज के भारत में मौजूद विभिन्न धर्मों की संस्थाओं, सामाजिक संगठन और सिद्धांतों का जिक्र किया गया है। हमने यहां विभिन्न धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन से बचने की कोशिश की है। हमारा मुख्य उद्देश्य इन धर्मों के बारे में आवश्यक सूचना प्रदान करना है ताकि आप पर्यटकों के प्रश्नों का सही समाधान मिल सकें।

इकाई 5 तीर्थस्थल की चर्चा की गई है। इसमें पर्यटन का मुख्य प्रेरक स्रोत प्राचीन भारतीय परम्परानुसार तीर्थस्थलों का भ्रमण है। इस परम्परा को जारी रखते हुए इस इकाई में चार अध्ययन विषय लिए हैः वैष्णों देवी, कामाख्या, तिरूपति एवं अजमेरशरीफ।

इकाई 6 में समुद्रतटीय और द्वीपीय आरामगाहों : कोवलम और लक्षद्वीप की चर्चा की गई है। इस इकाई में अन्य पर्यटन स्थलों के रूप में समुद्रतटीय और द्वीपीय आरामगाहों की परिकल्पना और विकास के बारे में जानेंगे। इस इकाई में उदाहरणस्वरूप दो विशेष पर्यटन स्थलों, क्रमशः कोवलम तथा लक्षद्वीप, का विस्तृत विवरण दिया गया है।

इकाई 4 भारत के धर्म

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 भारत की धार्मिक विविधता

4.3 हिंदू धर्म

4.4 इस्लाम धर्म

4.5 बौद्ध धर्म

4.6 जैन धर्म

4.7 ईसाई धर्म

4.8 सिक्ख धर्म

4.9 सारांश

4.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम आज के भारत के प्रमुख धर्मों के बारे में विचार विमर्श करेंगे। अध्ययन के लिए हमने हिंदू, इस्लाम, बौद्ध, जैन, ईसाई और सिक्ख धर्म को चुना है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- भारतीय समाज के बहुवादी चरित्र को समझ सकेंगे;
- उपरिवर्णित धर्मों के आधारभूत मतों की जानकारी हासिल कर सकेंगे; और
- विविध धर्मों से जुड़ी प्रथाओं और रीति-रिवाजों से परिचित हो सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

भारत में कई प्रकार के मत, धर्म और पंथ मौजूद हैं। इनमें से कुछ काफी संगठित और सुपरिभाषित सैद्धांतिक ढांचे और दर्शन से युक्त हैं जबकि काफी बड़ी संख्या इस विशेषता से वंचित है। इसके बावजूद इन सबकी अपनी-अपनी धार्मिक प्रथाएं, पूजा पद्धति और रीति-रिवाज हैं।

इन सभी मतों के विस्तार में जाना संभव नहीं है। अतः हम यहां कुछ महत्वपूर्ण धर्मों पर ही बातचीत करेंगे। इस इकाई में हमने हिंदू, इस्लाम, बौद्ध, जैन, सिक्ख और ईसाई धर्म पर विस्तार से चर्चा की है। लोकप्रियता और इन धर्मों के भौगोलिक प्रसार के आधार पर ही इनका चयन किया गया है। इस्लाम और ईसाई धर्म को छोड़कर बाकी सभी का जन्म भारत में हुआ है। इस्लाम और ईसाई धर्म का जन्म तो भारत के बाहर हुआ है परंतु यहाँ आने के बाद इन पर भारतीय संस्कृति और दर्शन का भी प्रभाव पड़ा है। इसी प्रकार इन्होंने भी भारत में प्रचलित धर्मों को प्रभावित किया है।

हम महसूस करते हैं कि पर्यटन के विद्यार्थी होने के नाते आपको भारत की समृद्ध धार्मिक परंपरा की जानकारी होनी चाहिए। यहां हम इन धर्मों की दार्शनिक जटिलताओं और

तुलनात्मक गुणों की चर्चा नहीं करने जा रहे हैं। हमारा उद्देश्य आपको इन धर्मों की मूलभूत विशेषताओं से परिचित करना है।

इस इकाई के अलग-अलग भागों में अलग-अलग धर्मों की चर्चा की गई है। इनमें सर्वप्रथम हम आधारभूत मान्यताओं की चर्चा करेंगे। इसके बाद सामाजिक संगठनों और संस्थानों का उल्लेख किया जाएगा। जहां जरूरत होगी वहां पर्यटन के आलोक में कुछ खास विशेषताओं का जिक्र किया जाएगा।

हम महसूस करते हैं कि पर्यटन पेशेवर होने के नाते आपको भारत और विदेशों से आए विभिन्न धर्मों और मतों के पर्यटकों से वास्ता पड़ेगा। हम आशा करते हैं कि इस इकाई को पढ़कर आप बहु-धर्मी भारतीय समाज के बारे में आधारभूत जानकारी हासिल कर सकेंगे और इस प्रकार एक पर्यटन कार्मिक के रूप में आप अपनी योग्यता और बढ़ा सकेंगे।

4.2 भारत की धार्मिक विविधता

इस इकाई की प्रस्तावना में यह बताया जा चुका है कि भारत में अनेक धर्मों का वास है। भारतीय जनगणना में धर्म संबंधी आकड़े समृद्ध और अद्वितीय सामाजिक संरचना वाले देशों के अद्भुत बहुरूप दर्शक प्रस्तुत करते है। भारत उनमें से कई का उत्पत्ति का स्थान रहा है जबकि विदेशी मूल के कुछ धर्मो ने भी यहां अपना परचम लहराया है। भारत उस भूमि के रूप में है जहां से कई धर्मों अर्थात् हिन्दू धर्म बौद्ध, धर्म सिख धर्म और जैन धर्म की उत्पत्ति हुई है उसी समय देश में कई स्वदेशी स्थानीय धर्मों को भी जीया गया है, जिन्होंने सदियों से प्रमुख धर्मों के प्रभाव को समाप्त किया है। प्रत्येक धर्म अपने अस्तित्व को दृढ़ता से धारण करता है। विभिन्न धार्मिक समूहों का सह-अस्तित्व इस देश को पूरी तरह से अद्वितीय बनाता है। विविधता में एकता की झलक भारतीय जनगणना में स्पष्ट रूप से स्वदेशी जा सकती है। पीपुल आफ इंडिया परियोजना के नाम से भारतीय नृशास्त्रीय सर्वेक्षण ने व्यापक अध्ययन किया है। इस परियोजना से प्राप्त धर्म संबंधी आंकड़ों से रोचक तथ्य सामने आए हैं। एक महत्वपूर्ण तथ्य यह सामने आया है कि प्रत्येक धर्म में अनेक समुदायों के अनुयायी हैं। पीपुल आफ इंडिया परियोजना में धर्मानुसार फैलाव, समुदायों की संख्या और प्रत्येक धर्म को मानने वाली जनता का प्रतिशत दर्शाया गया है। छह प्रमुख धर्मों के अलावा यहूदी और ज़ोरोस्ट्रीयन धर्म के आंकड़े भी उपलब्ध हैं।

इस अध्ययन से एक रोचक तथ्य सामने आता है कि कई समुदाय एक या एक से अधिक धर्मों के अनुयायी हैं। एक अध्ययन के अनुसार "27 समुदाय हिंदू धर्म और सिक्ख धर्म दोनों के अनुयायी हैं, 116 हिंदू और ईसाई धर्म, 35 हिंदू धर्म और इस्लाम, 21 हिंदू और जैन धर्म और 29 समुदाय हिंदू और बौद्ध धर्म दोनों के अनुयायी हैं"। **(के. एस. सिंह, पीपुल ऑफ इंडियाः एन इन्ट्रोडक्शन, पृ० 82-83)।**

तालिका 1 : संख्यात्मक सामर्थ्य के क्रम में भारत में धार्मिक समुदाय

धार्मिक समुदाय	प्रतिशत	अनुमानित	राज्य का बहुमत	लिंग अनुपात
सभी धर्म	100.00%	121 करोड़	35	933
हिन्दू	79.80%	96.62 करोड़	28	931
मुस्लिम	14.23%	17.22 करोड़	2	936

इसाई	2.30%	2.78 करोड़	4	1009
सिक्ख	1.72%	2.08 करोड़	1	893
बौद्ध	0.70%	84.43 लाख	-	953
जैन	0.37%	44.52 लाख	-	940
अन्य धर्म	0.66%	79.38 लाख	-	992
नहीं बताया हुआ	0.24%	28.67 लाख	-	-

तालिका 2 : भारत के प्रमुख धार्मिक समुदायों की दशकीय वृद्धि

धार्मिक समुदाय	**1991**	**2001**	**2011**
हिन्दू	25.1	20.3	16.8
मुस्लिम	34.5	29.5	24.6
इसाई	21.5	22.6	15.5
सिक्ख	24.3	18.2	8.4
बौद्ध	35.3	24.5	6.1
जैन	4.6	26	5.4

प्रमुख धर्मों के अलावा धर्म के कुछ स्थानीय रूप भी मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, पोनी पोलो (अरुणाचल प्रदेश में सूर्य और चन्द्र का धर्म), शरण धर्म या जहेरा (मुड़ा और संथाल जनजाति का धर्म), सानामाली (मणिपुर के मेइतियों का धर्म)।

संपूर्ण देश में इतनी बड़ी संख्या और मात्रा में धर्म की उपस्थिति के कारण कई प्रकार के सामाजिक संगठन, संस्थान, अनुष्ठान आदि की स्थापना हुई है। ये सभी धर्म और समुदाय एक दूसरे के संपर्क में आते रहते हैं, अतः उनके बीच सामान्य सामाजिक संस्थाओं और प्रथाओं का उदय हुआ है। कई नए सामाजिक धार्मिक आंदोलन का भी जन्म हुआ है। इन धर्मों में जन्म, विवाह और मृत्यु से संबंधित अनेक अनुष्ठान समान हैं। इसी प्रकार क्षेत्र विशेष के त्यौहारों में भी समानता है। अधिकांश क्षेत्रों के पहनावे और जीवनशैली में एकरूपता है।

भारतीय समाज एक धर्म से दूसरे धर्म में परिवर्तन की छूट प्रदान करता है। पीपुल ऑफ इंडिया के अनुसार 15 प्रतिशत समुदायों में धर्म परिवर्तन की सूचना मिलती है। कई मामलों में धर्म के बदलने पर भी उस समुदाय में पूर्व प्रचलित प्रथाएं चलती रहती हैं। इससे भारतीय समाज में व्यापकता और विविधता आती है।

आगे के भागों में हम भारत के प्रमुख धर्मों की विशेषताओं का अध्ययन करेंगे।

4.3 हिंदू धर्म

हिंदू धर्म को किसी एक मत या विश्वास के रूप में व्याख्यायित करना अत्यंत कठिन कार्य है। आरंभ में हिंदू शब्द का प्रयोग किन्हीं खास धर्मावलम्बियों के लिए नहीं किया जाता था। भारत आने वाले विदेशियों ने इस शब्द का प्रयोग सिंधु घाटी सभ्यता के निवासियों के लिए किया था। बाद में हिंदू का प्रयोग विशेष धर्म के मतावलम्बियों के लिए किया जाने लगा।

ऐतिहासिक-धार्मिक साहित्य में इस मत को इंगित करने के लिए वैदिक धर्म (वेद का धर्म और सनातन धर्म (शाश्वत मत) का प्रयोग किया गया है।

इस प्रकार हिंदू धर्म में ईश्वर की एक संकल्पना, धर्म ग्रंथ या धार्मिक प्रथा को रेखांकित करना दुरुह कार्य है। हिंदू धर्म कई प्रकार के मतों और विश्वासों का संग्रह है। हिंदू धर्म में कई पंथ और देवी-देवता हैं। अपने उदार चरित्र के कारण हिंदू धर्म ने कई मतों को अपने भीतर समाहित कर लिया। इन विविधताओं के बावजूद इसमें एक एकता का सूत्र भी है जो हिंदू मतावलम्बियों को एक साथ जोड़ता है।

भारत में इस धर्म के मतावलंबी सबसे ज्यादा हैं। इसके अनुयायी बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान, बर्मा, इंडोनेशिया, गुयाना, फीजी, मारिशस, पाकिस्तान और दुनिया के अन्य भागों में भी फैले हुए हैं।

आस्था और विश्वास

यह विश्व की सबसे पुरानी आस्थाओं में से एक है। शैव धर्म का आरंभ पूर्व-वैदिक काल में माना जाता है। इसके विकास के क्रम में कई पंथ और उप-पंथ इससे निकले। इसी प्रकार कई मत और विश्वास इसमें समाते भी गए।

यहां हम हिंदू धर्म की आम विशेषताओं का उल्लेख करने जा रहे हैं।

ब्रह्मा और आत्मा

हिंदू एक शाश्वत, अनन्त और चरम सत्ता में विश्वास रखते हैं, जिसे ब्रह्मा कहा जाता है। ब्रह्मा घट-घट में व्याप्त हैं। हिंदू धर्म में ब्रह्मा (परमात्मा) और आत्मा के संबंध में काफी विचार-विमर्श किया गया है। इस संबंध में अलग-अलग विचार भी मिलते हैं। एक मत है कि ईश्वर की कोई सत्ता नहीं है और ब्रह्मा की चरम सत्ता है। परंतु अधिकांश मत ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखते हैं।

ऐसा माना जाता है कि आत्मा अमर है और यह एक काया से दूसरी काया में प्रवेश करती रहती है। इसकी अनंत यात्रा चलती रहती है। कभी यह मनुष्य का रूप धारण करती है तो कभी पशु और कभी महामानव का रूप लेती है। यह मनुष्यों के पूर्वजन्मों के कर्म का फल है। अच्छे और बुरे कर्म का निर्धारण धर्म के अनुसार होता है।

धर्म के कई अर्थ हैं। धार्मिक संदर्भ में इसका प्रयोग समस्त ब्रह्मांड से शामिल ब्रह्मांडमीमांसा, नैतिक, सामाजिक और वैधानिक सिद्धांतों के लिए किया जाता है। विभिन्न श्रेणी के लोगों के लिए यह समुचित नैतिक मानदंड स्थापित करता है।

पुरुषार्थ

हिंदू धर्म के अनुसार एक संपूर्ण जीवन में चार प्रकार की इच्छाएं होती हैंः i) धर्म, ii) अर्थ (सांसारिक इच्छाएं) iii) काम (प्रेम की इच्छा) और iv) मोक्ष (मुक्ति)। सफल जीवन में चारों इच्छाओं का समन्वय होना चाहिए। एक हिंदू को अपने जीवन में ईश्वर, साधु-महात्मन, पूर्वज और मानव मात्र के प्रति कुछ कर्त्तव्य होते हैं।

कर्म, पुनर्जन्म और मोक्ष

धर्म द्वारा स्थापित जीवन मूल्यों के अनुसार कार्य करना ही कर्म है। मानव मात्र से सत्कर्म की अपेक्षा की जाती है। ऐसा माना जाता है कि मृत्यु के बाद शरीर नष्ट हो जाता है परंतु आत्मा का मनुष्य या पशु के रूप में पुनर्जन्म होता है।

यह पुनर्जन्म व्यक्ति के कर्म पर आधारित होता है। अगर कर्म अच्छे हैं तो बेहतर रूप में जन्म होता है अन्यथा निम्न रूप की प्राप्ति होती है। मोक्ष प्राप्ति जीवन का सर्वोत्कृष्ट लक्ष्य है जिसमें जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म से मुक्ति मिल जाती है।

धर्म ग्रंथ

हिंदू धर्म के कई धर्म ग्रंथ हैं। यहां हम उनका वर्णन कालक्रमानुसार करने जा रहे हैं।

वेद सबसे पुराने ग्रंथ हैं। **वेद** चार हैं - **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।** ये सभी श्लोकों के रूप में लिखे गए हैं।

ब्राह्मण धर्मशास्त्रीय प्रबंध ग्रंथ हैं। ये पद्य में रचे गये हैं और इनमें अनुष्ठानों का महत्व समझाया गया है। वनों में संन्यास का जीवन व्यतीत कर रहे तपस्वियों द्वारा रचित ग्रंथ आरण्यक के नाम से जाने जाते हैं। इसमें साधना संबंधी ज्ञान का समावेश है।

उपनिषद आरण्यक के अंश हैं और इनमें भारतीय दर्शन की चर्चा है। **उपनिषदों** की संख्या लगभग 200 है। इनमें से उल्लेखनीय हैः **ईश, केन, प्रसन, मुंडक, तैत्रेय, ऐत्रेय, छान्दोग्य, स्नेतस्यात्र और मैत्रेयी।**

वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और **उपनिषद** को मिलाकर **श्रुति या ईश्वरीय ज्ञान** कहते हैं।

दूसरे कोटि के ग्रंथों को **स्मृति** कहते हैं। ये श्रुति से प्रमाणित होते हैं। इनका उद्भव मानवीय माना जाता है। इसकी रचना ई. पू. 600 से 1200 ई. के बीच हुई है। (कुछ **पुराण** बाद के हैं।) इस कोटि में **वेदांग, पुराण**, **महाकाव्य** और सूत्र शामिल हैं।

वेदांगों में कल्प, शिक्षा, छंद, व्याकरण, निरूवत और ज्योतिष शामिल हैं। कल्पसूत्र सबसे महत्वपूर्ण सूत्र है। मनुस्मृति का निर्माण काफी बाद में हुआ।

रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य आरंभिक स्मृति काल (600 ई. पू. से 200 ई.) में रचे गए। इन महाकाव्यों के माध्यम से उपनिषदों का ज्ञान जनता तक पहुंचा। ऐसा माना जाता है कि **रामायण** की रचना **महाभारत** से पहले हुई थी।

महाभारत के छठे अध्याय में **भागवत** गीता शामिल है। इसमें कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को मनुष्य, नश्वरता, सांसारिकता और मोक्षप्राप्ति की शिक्षा दी है। इसमें फल की चिंता किए बगैर कर्म करने का उपदेश दिया गया है।

शताब्दियों से **भागवत गीता** हिंदुओं का एक पवित्र और लोकप्रिय ग्रंथ रहा है। इससे प्रेरित होकर कई दार्शनिक शाखाओं का विकास हुआ।

पुराण भी स्मृति काल में ही लिखे गए। इनमें जन्म, मृत्यु, पुनर्जन्म, दैवी शक्ति आदि का उल्लेख किया गया है। परंपरागत रूप से 18 पुराण महत्वपूर्ण माने गये हैं और इन्हें एक साथ **महापुराण** कहा जाता है। कुछ **पुराण** विभिन्न मतों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसे **वैष्णव, शैव** और **शाक्त** पुराण।

कई ग्रंथों के क्षेत्रीय रूप भी प्राप्त होते हैं और इनमें अपने-अपने हिसाब से प्रक्षेपण भी किया गया है।

4.4 इस्लाम धर्म

इस्लाम धर्म के अनुयायी अपने मत की शुरुआत संसार के अस्तित्व में आने के साथ मानते हैं। उनका मानना है कि समय-समय पर अल्लाह के पैगम्बरों ने इस धर्म का प्रचार-प्रसार किया।

आज के इस्लाम की शुरुआत लगभग 1400 साल पहले सऊदी अरब में हुई थी। पैगम्बर मोहम्मद को अंतिम पैगम्बर माना जाता है जिन्होंने इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार किया और आज के इस्लाम की नींव डाली। इस्लाम के अनुयाइयों को मुसलमान कहा जाता है। दक्षिणी समुद्र तट पर व्यापारियों के साथ मुसलमान सबसे पहले 8वीं शताब्दी में भारत में आए। इसके बाद उत्तर-पश्चिम सीमांत क्षेत्र पर मुसलमानों का आक्रमण हुआ। संपर्क का यह दूसरा मौका था । मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में अरबों ने 8वीं शताब्दी में सिंध पर आक्रमण किया। 10वीं शताब्दी के बाद मध्य एशिया से कई आक्रमण हुए। तेरहवीं शताब्दी के आरंभ में मोहम्मद गौरी के नेतृत्व में तुर्कों ने दिल्ली की गद्दी पर कब्ज़ा जमा लिया। इसके बाद मध्य एशिया से सूफी संत भारत आए और कई यहीं बस गए। शेख मुइनुद्दीन चिश्ती भी आरंभ में आए थे और वे अजमेर में बस गए। अजमेर स्थित उनकी मज़ार पर सभी धर्मों के लोग अपनी श्रद्धा प्रकट करने आते हैं। इस्लाम की शिक्षा के अनुसार एक मुसलमान को निम्नलिखित बातों पर विश्वास रखना चाहिए :

1) एक ईश्वर में विश्वास, जिसका कोई दूसरा रूप नहीं है और जो सर्वशक्तिमान और सर्व व्याप्त है।

2) विभिन्न पैगम्बरों को ईश्वर ने अपने ग्रंथों से परिचित कराया जिनमें कुरान अंतिम है।

3) मोसेस (मूसा) और ईसा को मिलाकर सभी पैगंबर ईश्वर के भेजे हुए दूत थे। इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण मान्यता यह है कि पैगंबर मोहम्मद पृथ्वी पर ईश्वर के भेजे हुए अंतिम दूत हैं।

4) निर्णय के दिन में विश्वास जब दुनिया समाप्त हो जाएगी और लोग अपने जीवन में किए गए अपने कर्मों के लिए पुरस्कृत या दंडित किए जाएंगे। इसमें जन्नत (स्वर्ग) और (नरक) की भी अवधारणा शामिल है।

5) ईश्वर के देवदूत (फरिश्ते) हैं जो ईश्वर के रूप नहीं है बल्कि ईश्वर की वंदना करते हैं और ईश्वर द्वारा प्रदत्त कार्यों को पूरा करते हैं।

इस्लाम की उपर्युक्त मान्यताओं के अलावा इसके अनुयाइयों को कुछ कर्तव्य भी निभाने पड़ते हैं। मुसलमान के धार्मिक कर्तव्य :

1) **नमाज़ (प्रार्थना) :** बनाए गए नियम के अनुसार एक मुसलमान को प्रतिदिन पांच बार नमाज़ अवश्य अदा करनी चाहिए। (प्रातः, दिन, दोपहर, सूर्यास्त और सूर्यास्त के डेढ़ घंटे बाद)। शुक्रवार के दिन दोपहर में मस्जिदों में विशेष नमाज़ अदा की जाती है जहां समुदाय के सभी लोगों का इकट्ठा होना जरूरी है।

2) **ज़कात अदा करना :** एक मुसलमान को अपनी कमाई का 25 प्रतिशत धार्मिक और सामाजिक कार्यों के लिए प्रदान करना चाहिए।

3) **रोज़ा (उपवास):** रमज़ान (अरबिक कैलेंडर का महीना) में एक महीना रोज़ा रखना।

4) **हज (तीर्थयात्रा):** हैसियत रखने वाले सभी मुसलमानों को कम से कम एक बार अपने जीवन में हज करने मक्का जाना चाहिए।

प्रमुख ग्रंथ

मुसलमानों के भी कई पंथ और उप-पंथ है। यहां हम केवल दो पंथो - सुन्नी और शिया की चर्चा करेंगे।

i) **सुन्नी :** इनके अनुसार पैगंबर के बाद खलीफाओं की स्थापना इस्लाम के सिद्धांतों के अनुरूप है। जिसकी नींव पैगंबर ने डाली थी। (पैगंबर के बाद खलीफाओं के नाम क्रमानुसार इस प्रकार हैंः हज़रत अबू बक्र, उमर, उस्मान और अली)। वे कुरान और पैगंबर के सुन्नी (परंपरा) में ही आस्था रखते हैं। इन दोनों के ऊपर वे किसी की सत्ता नहीं मानते हैं।

ii) **शिया :** ये भी कुरान और पैगंबर की परंपरा में आस्था रखते हैं परंतु पैगंबर के बाद होने वाले उत्तराधिकारों के मामले में सुन्नियों से इनका मतभेद है। उनका मानना है कि पैगंबर के सही उत्तराधिकारी हज़रत अली (पैगंबर साहब के चचेरे भाई और दामाद) हैं। शियाओं का विचार है कि उत्तराधिकारी के रूप में अन्य खलीफाओं का अधिकार धर्मानुसार नहीं था। शनैः शनैः इनके बीच छोटे-छोटे मतभेद उभरते चले गए और ये दोनों अलग-अलग पंथों में बंट गए। शिया अली और उनके उत्तराधिकारी को इमाम (समुदाय के नेता) मानते हैं। 12 इमामों को वैधता प्रदान की गई है। शिया मुसलमानों का यह भी मानना है कि इमाम पर ईश्वर की विशेष कृपा होती है।

पिछले चौदह सौ सालों में भारत और उसके बाहर सुन्नी और शिया के बीच अनेकों संप्रदायों का जन्म हो गया है।

बोध प्रश्न 1

1) पचास शब्दों में ब्रह्म और कर्म की अवधारणा का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) हिंदू धर्म के प्रमुख धर्मग्रंथों के बारे में पचास शब्दों में एक टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

3) इस्लाम के उन पांच आधारभूत सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए जिस पर एक मुसलमान की आस्था अवश्य होनी चाहिए।

.....

.....

.....

.....

4) 50 शब्दों में इस्लाम के प्रमुख पंथों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

4.5 बौद्ध धर्म

आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व भारत में बौद्ध धर्म का जन्म हुआ। गौतम बुद्ध इस धर्म के संस्थापक थे। इसके अनुयायी भारत के विभिन्न भागों, श्रीलंका, दक्षिण-पूर्व एशिया, पूर्व एशिया आदि में फैले हुए हैं। पुराणों में बुद्ध को विष्णु का एक अवतार माना गया है। इसी कारण कई विद्वान इसे अलग धर्म नहीं मानते बल्कि हिंदू धर्म के सुधारवादी आंदोलन के रूप में देखते हैं। इसके बावजूद आज यह हिंदू धर्म से एक अलग धर्म के रूप में स्वीकृत है।

बुद्ध के उपदेश

गौतम बुद्ध ने ईश्वर, धर्म-ग्रंथों और पुजारियों की सत्ता को अस्वीकार करते हुए अनुष्ठानों का तिरस्कार किया। उन्होंने जाति संबंधी भेदभावों की भी आलोचना की। धर्म के मामले में उन्होंने ऊंच और नीच, पुरुष और स्त्री के बीच कोई भेद नहीं माना।

मनुष्य का दुख एक शाश्वत सत्य है और बुद्ध ने इससे निकलने का मार्ग सुझाया है। कर्म, पुनर्जन्म और मोक्ष उनकी शिक्षा और विचारों के केंद्र बिंदु हैं। बुद्ध की मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों ने उनकी आधारभूत शिक्षा की व्याख्या की और उसे विकसित किया। शनैः-शनैः इसमें कई संप्रदाय और उप संप्रदाय कायम हो गए। इस भाग में हम इन्हीं पर विचार करेंगे।

बौद्ध धर्म का सार तत्व

दुख की अवधारणा

बौद्ध धर्म के अनुसार **दुख,** कष्ट या पीड़ा मनुष्य के जीवन का अभिन्न हिस्सा है और कोई भी इससे बच नहीं सकता है। बीमारी, बुढ़ापा, मृत्यु, विछोह, इच्छाओं की पूर्ति न होना आदि इसी दुख के लक्षण हैं। बुद्ध ने चारों तरफ इस दुख और पीड़ा को साक्षात्कार किया।

दुख के कारण

बुद्ध के अनुसार इस दुख या पीड़ा का कारण धन, सत्ता, सुख और जीवन आदि के प्रति मोह है।

अनन्त इच्छाएं

निराशा और पीड़ा से बचने के लिए इच्छाओं पर विजय प्राप्त करना अनिवार्य है। बुद्ध के अनुसार अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए मनुष्य बार-बार जन्म लेता है। निर्वाण या जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति के लिए अपनी इच्छाओं का शमन करना होगा।

इच्छाओं को रोकने का मार्ग-अष्टांग मार्ग

बुद्ध ने अपनी इच्छाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए **अष्टांग अर्थात** आठ मार्ग सुझाए हैं। ये हैं - सत्य दृष्टि, सत्य मनोवृत्ति, सत्य वचन, सत्य व्यवहार, सत्य जीवन यापन, सत्य प्रयत्न, सत्य विचार और सत्य ध्यान। अगर कोई व्यक्ति इन आठ सिद्धांतों का पालन करता है तो वह निर्वाण प्राप्त कर जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाएगा। बौद्धों के लिए आचार-संहिता बौद्ध धर्म अपने अनुयायियों को दो श्रेणियों में विभक्त करता हैः i) साधारण अनुयायी और ii) **बौद्ध भिक्षु**। बौद्ध भिक्षुओं को कठोर नियमों का पालन करना होता है। **बौद्ध धर्म** में प्रवेश के लिए एक साधारण विधि अपनाई जाती है और इसके बाद उस व्यक्ति को बौद्ध धर्म का अनुयायी मान लिया जाता है। इसके बाद उसे किसी दूसरे धर्म का पालन करने

की अनुमति नहीं होती। उन्हें शपथ लेनी पड़ती है। बुद्ध के शरण में जाओ । धर्म के शरण में जाओ पंथ के शरण में जाओ।

पंच सिद्धांत

साधारण सदस्यों को पांच सिद्धांतों का पालन करना पड़ता है। ये हैं :

क) हिंसा न करना

ख) चोरी न करना

ग) परस्त्री गमन न करना

घ) झूठ न बोलना

ङ) नशा न करना।

बौद्ध भिक्षुओं को अपना परिवार, व्यवसाय और समाज त्यागकर एकाकी जीवन व्यतीत करना होता था। उनके लिए ये दस सिद्धांत निर्धारित हैं :

क) हिंसा न करना

ख) चोरी न करना

ग) यौनाचार न करना

घ) झूठ न बोलना

ङ) नशा न करना

च) गलत समय पर भोजन न करना

छ) नृत्य, संगीत और वाद्य संगीत से दूर रहना

ज) गहने-जेवर से दूर रहना

झ) आरामदायिक बिस्तर पर न सोना

ञ) धन न लेना

हीनयान

बुद्ध की मृत्यु के बाद मत और धार्मिक स्वरूप पर निर्णय करने के लिए कई परिषदें आयोजित की गईं। एक समूह मूल परंपराओं का अनुगामी था। यह समूह **हीनयान** (निम्न वाहन) के नाम से जाना गया। इस समूह का एक नियत धार्मिक ग्रंथ था और यह एक रूढ़िवादी निकाय था। उनका मुख्य **ग्रंथ त्रिपिटक** (तीन टोकरियां) तक सीमित हैं। ये हैं– **विनय पिटक** (अनुशासन की टोकरी), **सूत पिटक** (उपदेश की टोकरी) और **अभिधम्म पिटक** (शिक्षा संबंधी टोकरी)। इसके अनुयायी मुख्य रूप से पूर्व एशिया, श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड, लाओस, वियतनाम, कंबोडिया और भारत के विभिन्न भागों में फैले हैं।

महायान

दूसरे समूह ने अपने सिद्धांत और प्रथाएं बनाई जिन्हें बोधिसत्व (ज्ञान प्राप्ति) के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपने को **महायान** (बड़ा वाहन) कहा। उनके अनुसार **बोधिसत्व** में बुद्ध की संभावनाएं निहित हैं और इसे सब कोई प्राप्त कर सकता है। परंतु उन्हें **बोधिसत्व** पर ही रुक जाना पड़ता है और वे बुद्ध का पद नहीं प्राप्त कर सकते हैं। उनके अनुसार दुख में पड़े व्यक्ति को **बोधिसत्व** के जरिए मुक्ति दिलाई जा सकती है। इस प्रकार काफी लोग निर्वाण प्राप्त कर सकते हैं। नेपाल, सिक्किम, चीन, कोरिया, जापान और भारत में महायान के अनुयायी फैले हुए हैं।

हीनयान मूर्ति पूजा और ईश्वर के सिद्धांत में विश्वास नहीं रखता है। महायान ने अपने धर्म में मूर्ति पूजा की अवधारणा आरंभ की। **बोधिसत्व** मनुष्य को दुख से मुक्ति दिलाता है और कमज़ोर और बेसहारों की सहायता करता है।

बज्रयान या तंत्रयान

बज्रयान के अनुयायियों ने चमत्कार और रहस्य का आयाम विकसित किया। इस धारा के अनुयायियों के अनुसार दिव्य **शक्ति** प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने देवियों की आराधना की और इन्हें देवताओं की शक्ति का स्रोत माना। इसके अनुयायी तिब्बत और भारत में बिहार और बंगाल के प्रांतो और मंगोलिया में फैले हुए हैं।

भारत में नव-बौद्ध आंदोलन

बौद्ध धर्म ने आरंभ में ब्राह्मणवादी सामाजिक व्यवस्था या जाति प्रथा को चुनौती दी। समकालीन भारत में सामाजिक असमानता दूर करने के लिए इसे एक औज़ार के रूप में प्रयुक्त किया गया। डॉ० भीम राव अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को एक जन स्वरूप प्रदान किया। (उन्होंने स्वयं बौद्ध ग्रहण किया)। उन्होंने पिछड़े और शोषितों को सामाजिक न्याय दिलाने के लिए बौद्ध धर्म का सहारा लिया। परिणामस्वरूप अनुसूचित जाति के कई लोगों ने बौद्ध धर्म अपनाया।

4.6 जैन धर्म

जैन धर्म के अनुसार समय के चौबीस बड़े चक्र हैं। इन सभी चक्रों में विश्व में एक बड़े विचारक ने जन्म लिया है। बौद्ध धर्म के अनुयायी इन विचारकों को **''तीर्थंकर** या शिक्षक या मार्ग निर्देशक'' कहते और मानते हैं।

भगवान महावीर को 24वाँ **तीर्थंकर** माना जाता है।

मत-विश्वास

जैन धर्म का केन्द्रीय सिद्धांत है कि संपूर्ण प्रकृति जीवन से भरपूर है। यहां तक कि निर्जीव पदार्थ में भी **जीव** (आत्मा) होता है। अतः किसी व्यक्ति को जीव को घायल करने का अधिकार नहीं है। जीवित पदार्थों को नुकसान न पहुंचाकर व्यक्ति **निर्वाण** या शाश्वत शांति प्राप्त कर सकता है। अतः **अहिंसा** जैन धर्म का मूल तत्व है।

जैन धर्म की शिक्षा

23वें **तीर्थंकर पार्श्वनाथ** ने आत्मसंयम के चार सिद्धांत बनाए। भगवान महावीर ने उसमें पाँचवा सिद्धांत जोड़ा और इन्हें मिलाकर जैन धर्म की शिक्षा का निर्माण हुआ। ये हैं :

i) **अहिंसा** - किसी जीव को नुकसान न पहुंचाना

ii) **सुवर्त** - असत्य न बोलना

iii) **आर्तेय** - जो न दिया गया हो उसे न लेना

iv) **अपरिग्रह** - सांसारिक वस्तु का त्याग

v) **ब्रह्मचर्य** - अविवाहित जीवन

जैन धर्म के अनुसार **कर्म** आत्मा को शरीर से जोड़ता है। **मिथ्यावाद या अविद्या** से कष्ट होता है। **क्रोध, लोभ, मान,** और **माया, कर्म** के लिए हानिकारक है। एवं **सम्यक-ज्ञान, सम्यक दर्शन** और **सम्यक-चरित्र** के द्वारा मनुष्य अपने को जीवन के बंधन से मुक्त कर **निर्वाण** प्राप्त कर सकता है।

जैन धर्मानुयायियों के लिए जीवन संबंधी निर्देश

जैन धर्म के अनुयायियों की दो श्रेणियां हैं - साधारण अनुयायी और यती या भिक्षु। साधारण अनुयायियों को कुछ छूट मिली हुई है जो **याती** के लिए वर्जित है।

दोनों प्रकार के अनुयायियों के लिए **त्रितत्व** - सत्य निष्ठा, सत्य ज्ञान और सदाचार का पालन करना अनिवार्य है। **यात्तियों** के लिए जीवहत्या, ब्रह्मचर्य और रात्रि भोजन वर्जित है। आम आचार संहिताएं इस प्रकार हैं :

i) अहिंसा

ii) सत्य वचन

iii) परोपकार

iv) पवित्र मन

v) नियमित रूप से ध्यान लगाना

vi) पूर्णमासी और अमावस्या के आठवें और चौदहवें दिन उपवास

vii) मादक पेय न छूना

viii) धर्म ग्रंथों और मंत्रों का पाठ।

बोध प्रश्न 2

1) बौद्ध धर्म के मूल तत्वों पर संक्षेप में विचार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) बौद्ध धर्म के प्रमुख संप्रदायों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) जैन धर्म के प्रमुख उपदेशों पर विचार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4.7 ईसाई धर्म

परंपरा के अनुसार अपने जन्म के 50 वर्ष बाद भारत में ईसाई धर्म का पदार्पण हुआ। ईसा मसीह के एक प्रमुख शिष्य थामस का लगभग 52 ई. में केरल तट पर आगमन हुआ और उसने इस इलाके में सात गिरजा घरों की स्थापना की। आरंभ में ईसाई धर्म केरल तक ही सीमित रहा। आरंभिक 16वीं शताब्दी में यूरोपीय मिशनरियों के आगमन के बाद ईसाई धर्म भारत के सभी भागों में फैला । सबसे पहले पुर्तगाली, फिर डच, फ्रांसीसी, अंग्रेज और अन्य यूरोपीय और अमेरिकी मिशनरियों का आगमन भारत में हुआ। 1991 की जनगणना के अनुसार भारत में ईसाई धर्म के अनुयायियों की कुल संख्या 16.77 मीलियन अर्थात कुल जनसंख्या का 2.43 प्रतिशत थी और ये सारे भारत में फैले हुए थे। मुख्य रूप से केरल, तमिलनाडु, गोवा, नागालैंड, मिज़ोरम, मेघालय, मणिपुर और त्रिपुरा में इनका संकेंद्रण है।

मान्यताएँ

इस्लाम और यहूदी धर्म के समान ईसाई धर्म को भी दैवीय शक्ति या पवित्रता से परिपूर्ण धर्म माना जाता है। बाइबिल ईसाई धर्म का धर्म-ग्रंथ है।

ईसा मसीह

ईसाई धर्म के केंद्र में ईसा मसीह हैं। उनका जन्म आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व हुआ था। अपने जीवन काल में उन्होंने अनेक चमत्कार किए, बीमारों को स्वस्थ्य बनाया और यहां तक कि मृतकों को जीवन प्रदान किया। 33 वर्ष की अल्पायु में उनके दुश्मनों ने उन्हें सूली पर लटका दिया। ईसाई धर्म की मान्यता के अनुसार तीसरे दिन वे पुनः जीवित हो उठे और उन्होंने स्वर्ग की ओर प्रस्थान किया। उनके भक्तों ने उन्हें एक सत्यनिष्ठ व्यक्ति और ईश्वर का दर्जा दिया। उन्होंने अपने शिष्यों को आदेश दिया कि वे पूरे विश्व में उनके अभियान का प्रचार करें।

ईश्वर की अवधारणा

ईसाई धर्म की मान्यता के अनुसार ईश्वर अपने को तीन रूपों में प्रकट करता है - पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। ईश्वर की इस अवधारणा को तीनों की एकता के रूप में व्याख्यायित किया जाता है। ईसा मसीह ईश्वर हैं, पुत्र हैं और माता मेरी पवित्र आत्मा हैं। ईसाई धर्म की मान्यता के अनुसार मनुष्य के रूप में ईसा मसीह का जन्म लेना ईश्वर की एक योजना थी ताकि मनुष्य के कष्टों का निवारण किया जा सके।

बाइबिल

बाइबिल ईसाइयों का धर्म ग्रंथ है। इसमें दो पुस्तकें संग्रहीत हैं :

i) ओल्ड टेस्टामेंट और

ii) न्यू टेस्टामेंट।

ओल्ड टेस्टामेंट में यहूदियों के पवित्र लेख और ईसाई धर्म के आरंभिक लेख शामिल है। ओल्ड टेस्टामेंट मूल रूप में हेब्रू में लिखा गया था।

न्यू टेस्टामेंट पहली शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लिखा गया। दूसरी शताब्दी के अंत तक न्यू टेस्टामेंट के अधिकांश भाग को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया। इसमें 27 पुस्तकें शामिल हैं और मूलतः इन्हें यूनानी भाषा में लिखा गया था। इसमें ईसा मसीह के जीवन और

कार्यों, उनके सहयोगियों और अन्य संतों के कार्यों तथा अन्य बहुत सी बातों का उल्लेख है।

पाप और कुकर्म

बाइबिल के अनुसार ईश्वर ने स्वर्ग और नरक तथा मानव जाति के प्रथम पुरुष आदम (Adam) और स्त्री हव्वा (Eve) का निर्माण किया। एडम और इव अपने सर्जक के प्रति निष्ठावान नहीं रहे और उनके कारण पृथ्वी पर पाप और कुकर्म का आगमन हुआ। मनुष्य जाति ने इस पाप और दुष्कर्म को विरासत के रूप में प्राप्त किया और वे ईश्वर के संतान बनने से वंचित हो गए। पाप मुक्त मानव ईसा मसीह के कष्टों और मृत्यु से मनुष्य जाति को अपने कुकर्मों का प्रायश्चित करने का मौका मिला। ईश्वर ने अपनी एक मात्र संतान मसीह को मनुष्य को पतन के गर्त में जाने से बचाने के लिए पृथ्वी पर भेजा। अतः ईसा मसीह को मनुष्य जाति का संरक्षक माना जाता है। ईश्वर कुकर्मों की सजा देता है और सत्कर्मों के लिए इनाम देता है। जो दूसरों का बुरा सोचता और करता है उसे माफ कर देना ही सबसे बड़ा सत्कर्म है।

शरीर, आत्मा और मोक्ष

ईसाई धर्म के मतानुसार मनुष्य में एक आत्मा और शरीर होता है। शरीर नश्वर है और आत्मा शाश्वत है। मोक्ष प्राप्त कर व्यक्ति मृत्यु के बाद भी स्वर्ग में मौजूद रहता है। ईसाई धर्म आत्मा के संचरण पर विश्वास नहीं रखता। ईसा मसीह को संरक्षक मानने पर ही व्यक्ति को मोक्ष संभव है।

धार्मिक सम्मिलन

रविवार ईश्वर का दिन माना जाता है और इस दिन चर्च में पूजा-अर्चना की जाती है। इसमें ईश्वर से प्रार्थना की जाती है और लोगों को रोटी और दाखरस प्रदान किया जाता है। ईसा मसीह ने अपनी मृत्यु के पूर्व रात्रि में भोजन के समय ऐसा किया था। क्रॉस का प्रतीक उन्हें ईसा मसीह के बलिदान की याद दिलाता है।

बपतिस्मा

ईसाई धर्म के अनुसार कोई भी व्यक्ति जन्मजात ईसाई नहीं होता। उसे बपतिस्मा नामक एक धार्मिक अनुष्ठान द्वारा ईसाई बनाया जाता है। यह ईसाई के घर में जन्म लेने वाले बच्चे पर भी लागू होता है और दूसरे धर्म में जन्म लेने वाले बच्चे पर भी। ईसा मसीह के संदेश को प्रसारित करना और ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस धर्म के घेरे में लाना धार्मिक कार्य माना जाता है। ईसाई धर्म के शुभ संदेश को प्रसारित करने को सुधर्मवाद या इंजिलवाद (Evangelisation) के नाम से जाना जाता है।

प्रमुख संप्रदाय और विभाजन

भारत में ईसाइयों के दो प्रमुख संप्रदाय हैं - कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट-प्रोटेस्टेंट पंथ का उदय 16वीं शताब्दी के दौरान हुआ। उनका मानना था कि चर्च और समाज संकट में था। उन्होंने इसमें सुधार की मांग की उन्हें प्रोटेस्टेंट के रूप में जाना गया। दूसरी ओर कैथोलिक ने इस प्रकार के किसी भी संकट को मानने से इंकार कर दिया और इसे कुछ जटिल और प्रभावी शक्तियों का खेल बताया। प्रोटेस्टेंट पोप की सत्ता को अस्वीकार करते हैं जबकि कैथोलिक उनमें अगाध श्रद्धा रखते हैं। भारत में प्रमुख प्रोटेस्टेंट पंथ इस प्रकार है -

कैलविनिस्ट, ऐंग्लिकन और एनेबैपिस्ट। भारत के प्रमुख कैथोलिक पंथ हैं-सीरियन चर्च, लैटिन चर्च और मलंकारा।

4.8 सिक्ख धर्म

सिक्ख धर्म का उदय लगभग 200 साल में पूर्ण हुआ। इसके संस्थापक गुरुनानक देव (1469-1539) थे। उन्हें इस धर्म का प्रथम गुरू माना जाता है। गुरुनानक के बाद कई गुरु हुए जिनमें अंतिम गुरु (दसवें) गोविंद सिंह (1666-1708) थे। आज का सिक्ख धर्म इन दस गुरुओं के उपदेशों पर आधारित है।

मत और धार्मिक प्रथाएं

सिक्ख एक सुपरिभाषित मत व्यवस्था और निर्धारित धार्मिक प्रथाओं में आस्था रखते हैं। ये इस प्रकार हैं :

क) एक ईश्वर, दस गुरुओं और गुरु-ग्रंथ साहिब में आस्था।

ख) गुरु-मंत्र-वाहेगुरु (ईश्वर तुम महान हो) का जाप करना।

ग) गरीबों को लूटने या शोषण करने या जुआ खेलने से परहेज।

घ) शराब, तम के पदार्थों, अफीम आदि का सेवन वर्जित।

ङ) प्रत्येक सिक्ख को अमृत अनुष्ठान द्वारा पंथ में शामिल किया जाता है।

च) परिवार में जन्म, विवाह या मृत्यु के अवसर पर सिक्ख अनुष्ठानों का पालन।

छ) मूर्ति, मजार, मठों की पूजा वर्जित।

ज) एक सिक्ख को पाँच प्रतीकों या पंज कारों का पालन करना होता है।

झ) धार्मिक आचार संहिता की अवहेलना, जैसे बाल कटाना, तम्बाकू का सेवन, परस्त्रीगमन आदि की स्थिति में सिक्ख को पुनः अमृत का पान करना पड़ता है।

अमृत अनुष्ठान

1699 ई. में गुरु गोविंद सिंह ने यह प्रथा आरंभ की। धर्म का मतलब समझने की उम्र होने पर लड़के-लड़कियों को अमृत पान कराया जाता है। अमृत पान किए पांच सिक्ख (**पंच पियारे**) यह अनुष्ठान संपन्न कराते हैं।

पानी में चीनी मिलाकर उसे **खांडे** (दोधारी तलवार) से चलाया जाता है और मंत्रों का जाप होता है, इस प्रकार अमृत का निर्माण होता है। अमृत पान कर रहा व्यक्ति गुरू वाणी का ज़ोर-ज़ोर से जाप करता हुआ पंथ में अपनी आस्था प्रकट करता है। उसके चेहरे पर अमृत की फुहार दी जाती है। अमृत पान करने के बाद उन्हें पांच प्रतीकों का पालन करना होता है।

पाँच प्रतीक

अमृत पान किए हुए सिक्खों को सिक्ख धर्म के पाँच प्रतीकों का पालन करना होता है :

क) **केश** (बाल): सिक्ख अपने शरीर के किसी अंग के बाल को काट नहीं सकते हैं।

ख) **कडाः** लोहे का कड़ा दाहिने हाथ में पहना जाता है। इससे सिक्ख को आचार संहिता की बराबर याद आती रहती है।

ग) **कृपाणः** स्वरक्षा के लिए और गरीबों और मजबूरों की रक्षा के लिए सिक्ख को एक कृपाण रखना होता है।

घ) **कंघाः** लंबे बाल को साफ सुथरा रखने के लिए कंघा भी रखना होता है। यह पगड़ी के अंदर रखा जाता है।

ङ) **कच्छाः** यह ब्रह्मचर्य और नैतिकता का प्रतीक है। इससे यह भी पता चलता है कि कच्छा पहनने वाला हमेशा संघर्ष के लिए तैनात रहता है।

पूजा की पद्धति

सिक्ख **अकाल** (काल की सीमा से परे ईश्वर) की पूजा में आस्था रखते हैं और मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं रखते है। उनके पूजा-स्थल को गुरुद्वारा कहते हैं। गुरुद्वारा के द्वार सभी धर्म और संप्रदाय के लोगों के लिए खुला होता है। यह केवल एक धार्मिक स्थल नहीं होता बल्कि शरणार्थियों और जरूरतमंदों का शरण स्थल भी होता है। पैरों को धोकर और सिर ढककर ही कोई गुरुद्वारे में प्रवेश कर सकता है। गुरुद्वारे में एक उच्च पीठ पर "गुरू ग्रंथ" की स्थापना की जाती है। यहां गुरू ग्रंथ साहिब का पाठ किया जाता है। भक्तों और आगंतुकों को **प्रसाद** या **भोजन** उपलब्ध कराने के लिए आम रसोई या लंगर की व्यवस्था होती है।

कई धाराएँ

शनैः शनैः अन्य धर्मों की भांति सिक्ख धर्म की भी कई शाखाएं विकसित हुई :

क) निरंकारी बाबा दयाल निरंकारी आंदोलन के संस्थापक थे। उन्होंने मूर्ति पूजा, मजार पूजा या अन्य अनुष्ठानों का विरोध किया और अपने अनुयायियों को केवल एक निरंकारी (ईश्वर) की आराधना का आदेश दिया।

ख) **नामधारीः** भगत जवाहरमल और बाबा बालक सिंह ने नामधारी आंदोलन की शुरुआत की। परंतु इसे लोकप्रिय बनाने में उनके बाद के एक शिष्य बाबा राम सिंह का प्रमुख योगदान रहा। उन्होंने एक ईश्वर की अराधना की शिक्षा दी और जाति व्यवस्था, बाल हत्या, कम उम्र में विवाह और विवाह में लड़कियों की बिक्री का विरोध किया। बाद में यह एक पंथ के रूप में विकसित हुआ।

बोध प्रश्न 3

1) बाइबिल के बारे में 50 शब्द लिखिए।

.....

.....

.....

.....

2) सिक्ख धर्म की प्रमुख आस्थाओं और धार्मिक अनुष्ठानों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) सिक्ख धर्म की प्रमुख धाराओं का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4.9 सारांश

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि भारत में कई धर्म एक साथ विकसित और स्थापित होते रहे हैं। यहां विभिन्न धर्मों के बीच सामंजस्य और साहचर्य है। सैकड़ों वर्षों से विकसित हो रही भारतीय संस्कृति और सभ्यता में इन धर्मों की उल्लेखनीय भूमिका रही है।

4.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) ब्रह्म अनन्त है और घट-घट में व्याप्त है। **धर्म** की आचार संहिता के अनुसार कार्य करना ही **कर्म** है। विस्तार के लिए देखिए भाग 4.3

2) प्रमुख धर्म-ग्रंथ हैं, **वेद, ब्राह्मण, उपनिषद**। देखिए भाग 4.3

3) ये हैं : क) सर्वशक्तिमान ईश्वर, ख) **कुरान**, ग) पैगंबर मोहम्मद, घ) अंतिम न्याय का दिन और ङ) ईश्वर के दूत। देखिए भाग 4.4

4) देखिए भाग 4.4

बोध प्रश्न 2

1) इसमें दुख की अवधारणा और अष्टांग मार्ग शामिल है। देखिए भाग 4.5

2) तीन संप्रदाय है-**हीनयान, महायान** और **बज्रयान**। देखिए भाग 4.5

3) देखिए भाग 4.6

बोध प्रश्न 3

1) बाइबिल के दो संग्रह हैं, ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट। देखिए भाग 4.7

2) सिक्ख एक ईश्वर, **गुरुमंत्र,** नशा का तिरस्कार आदि में आस्था रखते हैं। देखिए भाग 4.8

3) ये हैंः निरंकारी और नामधारी, देखिए भाग 4.8

इकाई 5 तीर्थस्थल

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 इतिहास में तीर्थस्थल

5.3 तीर्थस्थल एवं पर्यटन

5.3.1 अंतर्संबंध

5.3.2 स्थान विशेष का विकास

5.3.3 महत्वपूर्ण तीर्थस्थल

5.4 तीर्थस्थल : अध्ययन विषय

5.4.1 वैष्णोदेवी

5.4.2 कामाख्या

5.4.3 तिरूपति

5.4.4 अजमेर : मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह

5.5 सारांश

5.6 शब्दावली

5.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप, निम्न बातें जानेंगे :

- भारत में तीर्थस्थानों की परम्परा;
- भारत तीर्थस्थल पर्यटन के विस्तार में हाल में क्या परिवर्तन आये हैं;
- तीर्थस्थल पर्यटन द्वारा एक विशेष क्षेत्र में आर्थिक सामाजिक परिवर्तन; एवं
- विभिन्न तीर्थस्थल पर्यटन बिन्दु, उनकी महत्ता, एवं सुविधाएँ जो वहाँ प्राप्त हैं।

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई तीर्थ यात्राओं की प्राचीन धारणा पर केन्द्रित है। आरम्भ में **तीर्थयात्रा** की भावना भौगोलिक पवित्रता (geopiety) से जुड़ी थी । तथापि अब जबकि मानव जीवन में व्यापारीकरण एवं भौतिकवाद घुसता जा रहा है, तीर्थ पर्यटन की धारणा भी बदलती जा रही है। आज व्यक्ति विलासप्रिय होने के साथ साथ आनन्द एवं आराम चाहने लगा है। तीर्थयात्रा में इन सभी कारणों से तीर्थ पर्यटन का मूल आधार ही तेजी से बदलता जा रहा है। यहाँ विस्तृत तृतीय क्षेत्र (tertiary sector) में विकास की आवश्यकता है जिसके द्वारा पर्यटक को सारे आराम दिये जा सकते हैं। इस तरह के विकास का अर्थ क्षेत्र विशेष के समस्त आर्थिक सामाजिक ढाँचे की पुनः कल्पना है। इसका परिणाम बड़े शहरों एवं विभिन्न दस्तकारियों की उन्नति है। इसी के साथ ही इसका दूसरा पहलू पारिस्थितिकी (Ecology)

के सन्तुलन में व्यवधान है- वातावरण का प्रदूषण। मानसिक शान्ति एवं सांत्वना जो तीर्थ में मिलती थी, अर्थात् पुराने समय की बात हो गई है। इस बात को ध्यान में रखते हुये इस इकाई में भारत के तीर्थस्थलों को कुछ अध्ययन विषय की तरह लिया गया है। यहाँ आपको ज्ञात होगा कि तीर्थ पर्यटन भारत में कैसे विकसित हो रहा है एवं स्वदेशी पर्यटन को इससे बहुत अधिक सम्भावनाएँ हैं।

5.2 इतिहास में तीर्थस्थल

इस भाग में हमने तीर्थ पर्यटन की उसके ऐतिहासिक दृष्टिकोण के आधार पर चर्चा की है।

भारत में तीर्थ पर्यटन की एक बहुत प्राचीन परम्परा है। प्राचीन काल से ही भारतीय शान्ति की खोज में **तीर्थयात्रा** करते आये हैं। इसके अतिरिक्त इतिहास इस तरह के प्रसंगों से भरा पड़ा है कि व्यापारी व सौदागर व्यापारिक गतिविधियों के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं। परम्परानुसार हिन्दू चारों **धाम** की **यात्रा** पर जाते थे जोकि भारत के चारों कोनों में स्थापित हैं- उत्तर में बद्रीनाथ (पहाड़ों पर), पूर्व में पुरी (समुद्र के किनारे), पश्चिम में द्वारिका (समुद्री किनारा), एवं दक्षिण में रामेश्वरम् (समुद्र तट)। **तीर्थयात्रा** मुख्यतः नदियों के कगारों एवं संगम के साथ-साथ फैली हुई थी । पवित्र नदियाँ, गंगा एवं यमुना पूजी जाती रही हैं, एवं आर्यों द्वारा बहुत बड़ी संख्याओं में श्लोक **गंगा** की प्रशंसा में रचे गये हैं। पहले, तीर्थ मन व विचारों की पवित्रता से जुड़ा था एवं पापों के प्रायश्चित एवं निर्वाण के लिये किया जाता था। "जितनी कठिन यात्रा उतना ही उत्तम **फल**" इससे तीर्थ का विचार जुड़ा था। इस प्रकार, तीर्थयात्रा के लिये कम से कम सुविधाओं की आवश्यकता जुड़ी थी।

इस परम्परागत छवि के विपरीत, आधुनिक युग में तीर्थ "आनन्ददायकता" से जुड़ गया है एवं तृतीय क्षेत्र में वृहत संसाधनों की आवश्यकता पर ज़ोर देता है। इसका बहुत अधिक गहरा असर पड़ा है। निम्न भागों में हम तीर्थ पर्यटन का निरीक्षण करेंगे एवं समाज पर उसके प्रभाव का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

5.3 तीर्थस्थल एवं पर्यटन

प्रस्तुत खंड में हम तीर्थ एवं पर्यटन के बारे में एवं पर्यटन उद्योग के समस्त विकास में इसके प्रभाव का अन्वेषण करेंगे।

5.3.1 अंर्तसंबंध

तीर्थ एवं पर्यटन आपस में घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं। पर्यटन उद्योग विशेष रूप से तीर्थस्थलों के लिये बहुत बड़ी संख्या में "स्थानीय पर्यटकों'' को आकर्षित करता है। तीर्थ पर्यटन यात्रा के प्रोत्साहन में विशेष रूप से सहायक है। आप देखेंगे कि तीर्थस्थलों पर उचित मात्रा में सुविधा प्रदान करने की लगातार बढ़ती हुई आवश्यकता ने राज्य सरकारों एवं पर्यटन विभागों पर दबाव डाला है कि बड़ी संख्या में तीर्थ यात्रियों को आकर्षित करने के लिए ठोस योजनाएँ बनायें चूँकि इस तरह का पर्यटन लाभदायक है। इसके कारण निजी पर्यटन संचालकों को काफी अधिक संख्या में इसने आकर्षित किया है। हम वैष्णों देवी का उल्लेख कर सकते हैं। पहले यात्रा बहुत ही कठिन थी। हाल में, तथापि, अब सड़कें नये सिरे से बन गई हैं एवं यातायात के साधन अब आसानी से उपलब्ध हैं। आज जम्मू, रेल एवं वायु दोनों से ही पूरी तरह जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार, तिरूपति, एक छोटा सा शहर है, वहाँ भी एयरपोर्ट है। ट्रेनें अब रामेश्वरम् तक की दूरी तय करती हैं। द्वारिका भी सड़क यातायात से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। यहाँ तक कि जहाज की सुविधाएँ भी द्वारिका जाने

के लिये उपलब्ध हैं। अजमेर, जोकि एक छोटा शहर है शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के कारण अपनी पूरी तरह महत्ता रखता है। वार्षिक **उर्स** में लाखों लोग इसमें शामिल होते हैं। इस तरह की यात्रा को प्रोत्साहन विशेष स्थान में तीर्थ यात्रा को बढाता है, साथ ही इसका आर्थिक - सामाजिक प्रभाव भी है। बड़ी संख्या में तीर्थ यात्री व भक्त जो तीर्थस्थल की यात्रा करते हैं, आय का एक बड़ा स्रोत भी हैं एवं उन सैंकड़ों लोगों के जीवन-यापन का स्रोत हैं जो पर्यटकों के आगमन पर आश्रित है। ऐसे बहुत से तीर्थ स्थान हैं जो पहले एक छोटे कस्बे हुआ करते थे, परन्तु अपनी धार्मिक महत्ता के कारण एक बड़े शहर के रूप में उजागर हुए हैं। कटरा, जोकि जम्मू का एक छोटा कस्बा है, अब वहाँ छोटे होटलों की लम्बी कतारें हैं । इसी प्रकार, शिरडी, एक बहुत छोटा गाँव शिरडी के साई बाबा की दरगाह होने की प्रसिद्धि के कारण अब तेजी से बड़े शहर के रूप में विकसित हो रहा है और वहाँ काफी संख्या में होटल बनते जा रहे हैं।

तीर्थस्थल एक बड़े क्रय केन्द्र के रूप में भी विकसित हो रहे हैं। द्वारिका कपड़े पर पेन्टिंग में विशिष्टता रखता है। इसी प्रकार लोग जम्मू से बड़ी मात्रा में **अखरोट** खरीदना पसन्द करते हैं। इसके अतिरिक्त इन तीर्थस्थलों में उपभोक्ता वस्तुओं की बाढ़ सी आ गयी है- जैसे- नकली गहने, चूड़ियाँ, स्थानीय हस्तकला (लकड़ी, जूट, केन, पत्थर पर नक्काशी, देवी देवताओं की मूर्ति) एवं सजावट की वस्तुएँ इत्यादि।

5.3.2 स्थान विशेष का विकास

यह एक विवादास्पद प्रश्न है कि तीर्थ पर्यटन एक विशेष क्षेत्र को विकास की ओर ले जाता है अर्थात् क्या इसके "विशेष" स्वरूप के कारण, पर्यटन के विकास में इसकी संभावना सीमित है। बहुत से ऐसे स्थल हैं जोकि एक तीर्थस्थल होने का विशेष उद्देश्य ही पूरा करते हैं, उदाहरणार्थ, प्रयाग, हरिद्वार, तिरूपति, नगरकोट, शिरडी, अजमेर शरीफ, अमृतसर, नानदेड़ एवं पुराना गोवा इत्यादि। तीर्थ पर्यटन का कार्यक्षेत्र इस अर्थ में एक विशिष्ट क्षेत्र कहा जा सकता है कि यदि कोई व्यक्ति किसी एक विशेष सम्प्रदाय/धर्म दरगाह/मन्दिर का अनुयायी या भक्त है तो वह बार-बार उन्हीं विशेष स्थलों की यात्रा करेगा जहाँ उसके आराध्य देव बसते हैं। यदि कोई और प्रेरक शक्ति नहीं है तो कुछ समय बाद, "किसी अन्य उत्साह" के अभाव में उसका आकर्षण कम हो सकता है। इस कारण बिना किसी शक के यह बात इस ओर इंगित करती है कि तीर्थ पर्यटन के विकास का कार्यक्षेत्र सीमित है। इसके विपरीत साहसिक पर्यटन का क्षेत्र बहुत विस्तृत है जोकि हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक फैला हुआ है।

यह सब होने के बाद भी तीर्थ पर्यटन में स्वदेशी पर्यटन के विकास के लिये पर्याप्त सम्भावनाएँ है। यदि कोई परम्परागत तीर्थ पर्यटन स्थलों की स्थिति की विवेचना करे तो हम देखते हैं कि हमारे पूवर्जों के पास तीर्थस्थलों को भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में पहचानने की अनूठी अनुभूति थी । उन्होंने इसके लिए उन स्थानों का चयन किया जो नदियों, झरनों, उनके संगमों, समुद्री तटों एवं पहाड़ों से सम्बन्धित हैं। उन्होंने तीर्थों को "भौगोलिक पवित्रता" से जोड़ा । **तीर्थ यात्रा** उन लोगों के लिए एक ऐसा अवसर था जो सांसारिक परेशानियों व चिन्ताओं से अलग रहना चाहते थे। इस प्रकार यह तीर्थ और साहसिक अभियान का दोहरा उद्देश्य पूरा करती थी । यदि कोई द्वारिका जाता है तो वह पोरबन्दर तट देखने का आकर्षण नहीं रोक सकता, यदि आप **पुरीधाम** जाते हैं तो आप सुनहरा त्रिकोण (golden triangle) पुरी, भुवनेश्वर एवं कोणार्क को देखने से स्वयं को नहीं रोक सकते। यदि आप रामेश्वर जाते हैं तो क्या आप कन्याकुमारी के समुद्र की प्रशंसा नहीं करना चाहेंगे? वैष्णोदेवी के मन्दिर के दर्शन आपकी दूर तक पैदल चलने की इच्छा को उजागर जरूर करेगा। इसी प्रकार गौहाटी जाकर क्या आप केवल कामाख्या मन्दिर तक

ही जायेंगे? क्या ब्रहमपुत्र की असीम शान्ति व काजीरंगा के जंगलों का आकर्षण आपको आकर्षित नहीं करेगा। इस बात से स्पष्ट है कि तीर्थ पर्यटन की किसी विशेष क्षेत्र की चारदीवारी में बाँधा नहीं जा सकता। इसमें स्वदेशी पर्यटन के विकास की बहुत अधिक सम्भावनाएँ है। इसी प्रकार यह इस बात की ओर भी इंगित करता है कि किसी भी स्थान को पर्यटक स्थल बनाने के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह पहले तीर्थ स्थान हो। यह इसके विपरीत भी हो सकता है।

5.3.3 महत्वपूर्ण तीर्थस्थल

भारत में तीर्थस्थलों को दो भागों में बाँटा जा सकता हैः प्रथम, कुछ ऐसे स्वस्थापित स्थल हैं जो प्राचीन समय से ही तीर्थ के मुख्य स्थान हैं। उदाहरणार्थ - बद्रीनाथ, केदारनाथ, तिरूपति, वैष्णोंदेवी इत्यादि। द्वितीय प्रकार के तीर्थस्थल वे हैं जो अपनी भौगोलिक राजनीतिक (geo-political) स्थिति एवं स्थान की प्राप्ति एवं अन्य सुविधाओं के कारण पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हो गए हैं। अजमेर शरीफ को मुगल बादशाहों का संरक्षण इसलिये मिला कि यह युद्ध नीति योजना की दृष्टि से महत्वपूर्ण जगह रही। मुगल बादशाहों का अजमेर आना दो तरफा उद्देश्य पूरा करता था। एक तो राजपूत राजाओं की गतिविधियों पर अंकुश व साथ ही गुजरात मार्ग पर नजर रखना। इसी प्रकार, महाराष्ट्र में गणपतिफुले (रत्नगिरि में) गणपति का तीर्थस्थल है परन्तु गजट में यह अभिलिखित है कि यह केवल एक पुखा (Hamlet) था एवं गणपति पूजन का कोई प्रतिष्ठित केन्द्र नहीं था। वास्तविकता यह है कि विदर्भ से पूना तक सत्ता परिवर्तन हुआ था जिसके कारण इसे एक मुख्य तीर्थस्थल के रूप में विकसित होने के लिये प्रेरित किया गया।

नीचे भारत में स्थित कुछ महत्वपूर्ण तीर्थस्थलों की सूची दी गई है।

उत्तरी क्षेत्र : अमरनाथ, बद्रीनाथ, केदारनाथ, वैष्णोदेवी, रूद्र प्रयाग, हरिद्वार, काशी, बनारस, प्रयाग, नगरकोट, लेह 'बौद्ध', कुरूक्षेत्र, अमृतसर, पटना साहेब, अयोध्या, हेमकुण्ड, विन्ध्यावासिनी, हज़रतबल दरगाह (श्रीनगर), चारारेशरीफ (गुलमर्ग), चित्रकूट इत्यादि।

पूर्वी क्षेत्र : कामाख्या देवी मन्दिर, जगन्नाथ मन्दिर (पुरी), सूर्य मन्दिर (कोणार्क), बेलूर मठ, दक्षिणेश्वर, कालीघाट मंदिर (कलकत्ता) एवं बोधगया (बौद्ध मठ) इत्यादि।

पश्चिमी क्षेत्र : सोमनाथ, द्वारिका, जूनागढ़ (जैन मन्दिर), गोवा (चर्च), दिलवाड़ा (जैन) मन्दिर, शिरडी, अजमेर, पुष्कर, उज्जैन, माहेश्वर इत्यादि।

दक्षिणी क्षेत्र : मदुरई, रामेश्वरम, तिरूपति, पुडुचेरी (अरविंद आश्रम), कन्याकुमारी, मीनाक्षी मन्दिर इत्यादि।

बोध प्रश्न 1

1) भारत में तीर्थ पर्यटन की अवधारणा में प्राचीन काल से अब तक हुए परिवर्तनों की विवेचना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) भारत में तीर्थ पर्यटन के भविष्य की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5.4 तीर्थस्थल : अध्ययन विषय

इस खंड में हमने कुछ तीर्थस्थल चुने हैं जिनका अध्ययन पर्यटकों को ध्यान में रखकर किया गया है।

5.4.1 वैष्णोदेवी

यह हिन्दुओं में प्रचलित मुख्य तीर्थस्थलों में से एक स्थान है (यहां अन्य धर्मों के लोग भी जाते हैं) जहाँ लाखों भक्त वैष्णो देवी को अपनी श्रद्धा अर्पित करने के लिये जाते हैं। प्रचलित विश्वास यह है कि जो भी माता के दर्शन कर लेता है उसे निराश नहीं होना पड़ता। वैष्णो देवी मन्दिर त्रिकुटा पहाड़ पर स्थित है, जो जम्मू से 61 कि. मी. उत्तर में है।

वैष्णो देवी पहुँचने के लिये पहले जम्मू जाना पड़ता है। इस स्थल पर रेल, वायु व सड़क यातायात से आसानी से जाया जा सकता है। भारतीय वायुयान की प्रतिदिन उड़ाने यहाँ जाती हैं जो जम्मू एवं श्रीनगर तथा जम्मू-दिल्ली की हैं। इसके अतिरिक्त चंड़ीगढ़ एवं अमृतसर भी जम्मू से वायु उड़ानों से जुड़े हुये हैं। रेल यातायात से जम्मू अपने दूरस्थ स्थान कन्याकुमारी तक जुड़ा हुआ है। इसके साथ ही बहुत सी ट्रेवल एजेंसियों (travel agencies) द्वारा भी संचालित भ्रमण (conducted tour) मध्य व उत्तर भारत में दिल्ली तथा अन्य नगरों में चलाये जाते हैं। प्रतिदिन बस सेवाएँ तरनतारन, अमृतसर, जालंधर, लुधियाना, पटियाला, चंडीगढ़, ज्वालाजी (वाया धर्मशाला) एवं श्रीनगर से उपलब्ध हैं।

जम्मू से कटरा के लिये रवाना होना पड़ता है जोकि 48 कि.मी. की दूरी पर है। कटरा के लिये पर्याप्त बस सेवा है। जम्मू के मुख्य अड्डे से सायं लगभग 8.30 बजे तक हर 10 मिनट पर बस मिलती है। टैक्सी सेवाएँ भी जम्मू से कटरा तक के लिये उपलब्ध हैं जो जम्मू हवाई अड्डे, रेलवे स्टेशन एवं पर्यटक स्वागत समिति से मिलती हैं। आजकल कटरा भी रेलवे से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

कटरा से वैष्णो देवी मन्दिर तक की दूरी 13 कि. मी. है जोकि पैदल या टट्टू पर तय की जाती है। बैटरी चालित वाहन भी उपलब्ध है। **पिट्ठू** बच्चों और सामान लादने के लिये उपलब्ध हैं। यह रास्ता पूरा पक्का है एवं इस पर सोडियम बल्ब रोशनी देते हैं। कटरा से सांझीछत तक हेलीकॉप्टर सेवाएं उपलब्ध हैं।

यात्री **निवास** एवं **विश्रामगृह** (मन्दिर के बोर्ड द्वारा संचालित), पर्यटक डाक बंगले, एवं विश्राम कक्ष (**जम्मू-कश्मीर पर्यटन विकास संघ द्वारा संचालित**) बहुत ही उचित मूल्यों पर कटरा में उपलब्ध हैं। यहाँ विभिन्न संगठनों द्वारा संचालित **धर्मशालाएँ** उचित मूल्यों पर उपलब्ध हैं। इसके अलावा बहुत से छोटे-छोटे होटल भी ठहरने के लिये उपलब्ध हैं। मंन्दिर बोर्ड की ओर से भी **अर्धक्वारी, साँझीछत एवं दरबार** (जहाँ कि मन्दिर है) में ठहरने की मुफ़्त व्यवस्था है।

मौसम : सर्दियों में यहाँ बहुत ठंड होती है। बर्फ़ भी गिरती है। जाड़ों में मोटे ऊनी कपड़ों की आवश्यकता होती है। गर्मियों में हल्के ऊनी कपड़े ही काफी हैं।

कटरा से किराए पर क्या वस्तुएँ ली जाएँ : कैनवस जूते, एक छड़ी, कपड़े के थैले, टोपियाँ, टॉर्च एवं पैदल चढ़ाई के लिये वाटरप्रूफ होने चाहिए, व ये सभी वस्तुएँ कटरा में किराये पर उपलब्ध हैं। इसके अलावा वे लोग जो पैदल यात्रा नहीं कर सकते उनके लिये **पिट्ठू, टट्टू** एवं (**पालकी**) डांडिया कटरा से किराये पर उपलब्ध हैं।

याद रखने योग्य बातें : वैष्णोदेवी के लिये रवाना होने से पहले कटरा से एक **यात्री पर्ची** लेनी पड़ती है। यात्रा पंजीकरण केन्द्र कटरा बस स्टैण्ड से इस पर्ची के बगैर बाणगंगा निरीक्षण चौकी से आगे नहीं जा सकते।

देखने योग्य वस्तुएँ : वैष्णो देवी मन्दिर के रास्ते में निम्नलिखित वस्तुएँ देखने योग्य हैं:

- **बाणगंगा :** विश्वास किया जाता है कि यहाँ देवी ने अपनी प्यास बुझाई थी।
- **अर्धक्वारी :** वह स्थान जहाँ गुफा में देवी ध्यानस्थ हुई थीं। यहाँ पर एक स्थान है "गर्भ जून" जिसके बारे में प्रचलित विश्वास है कि यहाँ देवी ने अपने त्रिशूल से गुफा के दूसरे सिरे को तोड़ कर द्वार बनाया था।
- **दरबार :** यहाँ पर मन्दिर स्थित है। यह कहा जाता है कि यहाँ देवी ने महाकाली का रूप धारण कर भैरोनाथ (एक तान्त्रिक दानव जो देवी को पाना चाहता था) का मर्दन किया था; एवं
- **भैरोंघाटी :** यहाँ पर भैरोंनाथ का सिर गिरा था।

पूजा के लिये कैसे, कहाँ और क्या खरीदें : नारियल, भेंट (चढ़ावा) एवं **पूजा** की अन्य सामग्री **कटरा** एवं **दरबार** की दुकानों पर उपलब्ध है। मन्दिर बोर्ड की स्वयं की दुकानें हैं। **दरबार** में **नारियल** एवं **भेंट** सस्ते दामों में उपलब्ध हैं।

भोजन सुविधाएँ : बड़ी संख्या में अल्पाहार-गृह मन्दिर बोर्ड की ओर से कटरा व दरबार में चलाए जाते हैं। जहाँ भोजन उचित दामों में उपलब्ध है। 12 जलपान इकाइयों के अलावा, श्राइन बोर्ड 5 भोजनालय चलाता है। जहां पर यात्रियों को उचित दामों पर सफाई से बनाया भोजन उपलब्ध करवाया जाता है। कटरा में एक, अर्धक्वारी पर एक व दरबार में तीन भोजनालय हैं। हाल ही में कैफे कॉफी डे, सागर रत्ना और डोमिनोज़ पिज्ज़ा जैसी बहुत सारी अंतर्राष्ट्रीय आहार शृंखलाएँ मार्ग में पनप गई हैं।

अन्य सुविधाएँ : चिकित्सा सुविधाएँ कटरा, बाणगंगा, एवं सांझीछत में उपलब्ध हैं।

धर्मशाला कैसे उपलब्ध हो : सबसे पहले पर्ची केन्द्र से पर्ची लेनी पड़ती है जिसमें समूह संख्या निर्धारित की जाती है। समूह संख्या के निर्धारण के पश्चात गेट न. 2 पर लाइन में खड़ा होना पड़ता है। गुफा के अन्दर माँ काली के दर्शन उनके पिंडी रूप में कर सकते हैं - महाकाली, महालक्ष्मी (महावैष्णवी) एवं महासरस्वती। निकास द्वार पर माता के चरणों से निकल रही पवित्र जल एकत्र कर सकते हैं।

मुख्य बातें :

1) मन्दिर के सभी भुगतानों की सरकारी रसीद ली जाए।
2) सभी सेवाओं की सरकारी मूल्य सूची उपलब्ध है। भुगतान के पहले उनका निरीक्षण कर लेना चाहिए।

3) पंजीकृत पिट्ठू, पोनी एवं डाँडीवालें की सेवाएँ ही प्राप्त करें। भुगतान से पहले इसका निरीक्षण कर लें।

4) मन्दिर बोर्ड के प्रसारण केन्द्रों पर खोये हुये लोगों के लिए सम्बन्ध स्थापित करें।

5.4.2 कामाख्या

असम (प्राचीन प्राग-ज्योतिषपुर एवं कामरूप) : दिलचस्प बात है कि यह जादू एवं तान्त्रिक विद्या से जुड़ा रहा है, कदाचित् भारत में तन्त्र के समस्त पीठों में सबसे प्रसिद्ध स्थान है कामाख्या का मन्दिर। कामरूप कामाख्या शब्द एक नये सम्प्रदाय का प्रतीक है, जोकि जादू-टोने से सम्बन्धित है। इसके पहले शैव धर्म मुख्य धर्म था। नरक, जो आरम्भिक राज्य की नींव डालने वाला था, ने कामाख्या (योनि/देवी) के अभिभावक का भार सँभाला एवं इसको प्रमाणित करने के लिये उसने इसका नाम प्राग ज्योतिषपुर में बदल कर कामाख्या रखा। कामाख्या मन्दिर नीलकल (नील पहाड़) पर स्थापित है। गोहाटी से तीन मील की दूरी पर देवी कामाख्या तीन रूपों में पूजी जाती है।

1) आदिकाली, देवी विष्णु से सम्बन्धित एवं संरक्षित

2) अक्षतयोनि एवं

3) शिव की अर्धांगनी।

मन्दिर की विशेषता यह है कि इसमें कोई प्रतिमा नहीं है। मन्दिर के अन्दर एक गुफा है, जिसके कोने में एक पत्थर का टुकड़ा है जिसके ऊपर **योनि** का प्रतीक उत्कीर्ण है, प्राकृतिक झरना उस पत्थर को सारे वर्ष भिगोये रखता है। इस मन्दिर का अनूठापन यह है कि इसमें तपस्या, ब्रह्मचर्य, दीर्घकालिक प्रतिज्ञाओं की अनुपस्थिति है और लोग मछली, गोश्त भोजन में शामिल करते हैं एवं महिलाओं का आना जाना खुले रूप में है। योनि पर फूल एवं पत्तियाँ, मछली, शहद, मदिरा इत्यादि अर्पित किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त जानवरों की बलि भी (केवल नर) दी जाती है। सूअरों की भी बलि दी जाती है। असम के गैरोस मुख्य पुजारी होते हैं।

मूल कामाख्या मन्दिर 16वीं शताब्दी में मुगल आक्रमण में नष्ट हो गया था। वर्तमान मन्दिर 1665 ई. में राजा, नरनारायण-कूच बिहार के राजा द्वारा फिर से बनवाया गया था।

आवास : कामाख्या मन्दिर के लिये पहले गोहाटी पहुँचना होता है जहाँ से मन्दिर 3 कि.मी. है। **पर्यटन विभाग** की एक पर्यटक लॉज गोहाटी (स्टेशन रोड) में है। इसके अतिरिक्त विलासमय एवं साधारण होटल भी उपलब्ध हैं।

यातायात : गोहाटी भारत के समस्त भागों से रेल एवं वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है। कलकत्ता, दिल्ली एवं बम्बई से रोज़ाना रेल सेवाएँ उपलब्ध हैं, जबकि मद्रास, कोचीन, त्रिवेन्द्रम, बंगलौर से सप्ताह में दो दिन रेल सेवा है। सड़क यातायात द्वारा भी असम अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। **असम राज्य परिवहन निगम** की बसें भी सारे असम में चलती हैं। साथ ही आरामदायक पर्यटक बसें भी उपलब्ध हैं। किराये पर कार उपलब्ध हैं। पर्यटन निदेशालय द्वारा भी संचालित भ्रमण का संचालन गोहाटी के अन्दर-बाहर किया जाता है। कामाख्या मन्दिर भी इसी संचालित भ्रमण द्वारा जाया जा सकता है। संचालित भ्रमण की सुविधा उपलब्ध करने के लिये पर्यटन सूचना अधिकारी, गोहाटी से मिलना होता है। इसके अतिरिक्त असम सरकार के पर्यटन विभाग ने समस्त भारत में पर्यटक सूचना केन्द्र खोले हैं। पर्यटन निदेशालय गोहाटी (**स्टेशन रोड़**) में है। दिल्ली में इनका दफ्तर बी-1, बाबा खड्गसिंह मार्ग पर है। स्वतंत्र यात्रा विवरण व्यक्तियों या समूहों द्वारा स्वयं तैयार किया जा सकता है।

खरीदारी : खरीददारी के लिये असम स्वर्ग है। सिल्क के लिए प्रसिद्ध है - ऐरी, गोल्डन, मूंगा, सफेद, पाट इसके अतिरिक्त बाँस व केन के सामानों से बाज़ार भरा पड़ा है। इसके अतिरिक्त बेल - मेटल की कृतियाँ, ताँबे, लकड़ी, हाथी दाँत एवं चाँदी की वस्तुएँ इत्यादि भी उपलब्ध हैं। असमी गमछा (तौलिया जिसमें जटिल फूलों वाले नमूने बने हैं) एवं जापी (सजावट वाला मुकुट) भी कुछ अन्य प्रसिद्ध हस्तकला की वस्तुएँ हैं। यह सभी वस्तुएँ सरकारी वाणिज्य केन्द्रों (Emporium) में जैसे कि - पूर्वाश्री, जागरण प्रागज्योतिका में उपलब्ध हैं। सुवालकूची (Sualkuchi) गाँव जो गोहाटी के पास है - सिल्क का सबसे बड़ा उत्पादक गाँव है। इसके अतिरिक्त आसाम चाय के लिये भी काफी प्रसिद्ध है। फुटकर दुकानों से जिनकी संख्या काफी अधिक है, यह चाय खरीदी जा सकती है। मुख्य खरीदारी के सामान गोहाटी में फैन्सी बाज़ार, पलटन बाज़ार, उलूबारी, गणेशवरी, एवं जी. एन. बी. रोड़ हैं।

जलवायु : अक्टूबर से अप्रैल तक शीत एवं बसन्त ऋतु, असम जाने का सबसे अच्छा समय है। ग्रीष्म काल में सूती एवं शीतकाल में ऊनी वस्त्रों की आवश्यकता होती है। सामान्य, तापमान ग्रीष्म ऋतु में लगभग 32.2° से. एवं सर्दियों में पारा नीचे गिर कर 10° से. हो जाता है।

नोट : सभी विदेशी पर्यटकों के लिये प्रतिबन्धित क्षेत्रों के लिये प्रवेश पास लेना आवश्यक है जबकि भारतीय नागरिकों के लिये यह प्रतिबन्ध नहीं है।

5.4.3 तिरूपति

तिरूपति मन्दिर भगवान वेंकटेश्वर का मंदिर है। तीर्थस्थल तिरूपति के लिये परिचय की कोई आवश्यकता नहीं है। वास्तव में यह मन्दिरों एवं तीर्थों की लड़ी का एक तन्तु जाल है जो कि पहाड़ी के उच्च एवं निम्न स्थान पर है। दक्षिण में देवता को श्रीनिवास पेरूमल एवं उत्तर में बालाजी के नाम से जाना जाता है। मुख्य देवता (वेंकटेश्वर) का स्थान तिरूपति पहाड़ियों के उच्च शिखर पर है जबकि उनके संघ की तिरूपति पहाड़ी के निम्न स्थान- ऐलमेलू मंगापुरम् में पूजा होती है।

तिरूपति का एक लम्बा इतिहास है। हम सुनते हैं कि 966 ई. में राजाओं एवं स्थानीय व्यापारियों द्वारा तिरूपति मन्दिर की देखभाल के लिये बहुत सी जमीन एवं गाँव दे दिये जाते थे । मन्दिर को पल्लवों के पाण्डया, विजय नगर के राजाओं, एवं बाद में मैसूर के राजाओं द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया।

तिरूमला मन्दिर द्रविड़ कला की एक श्रेष्ठ कृति है जिसमें गोपुरम् (बृहद द्वार) बहुत अधिक नक्काशी वाले हैं, और पूर्व दिशा की ओर हैं। कुल मिला कर तीन गोपुरम् हैं। प्रवेश द्वार (महाद्वार) कांसे का है जबकि दूसरा चाँदी एवं तीसरा सोने का है और मुख मंदिर के गर्भ की ओर है। मन्दिर के गर्भ में वेंकटेश्वर की काले पत्थर की एक बहुत बड़ी प्रतिमा रखी है। प्रतिमा विष्णु एवं शिव दोनों का ही प्रतीक लिये हुए हैं और वैष्णवपंथियों व शैवपंथियों दोनों को सहज आकर्षण प्रदान करती है।

क्या देखें : वेंकटेश्वर मन्दिर के अतिरिक्त तिरूमला में पर्यटकों की रुचि के अनेक स्थल हैं। कुल मिला कर वहाँ 108 तीर्थ पहाड़ी की चोटियां हैं। इन सबको देखने के लिये कम से कम तीन महीने का समय चाहिए। पापनाशनम्, आकाशगंगा, जोबली, गोगर्भम, कपिला, रामकृष्ण तीर्थ इत्यादि इनमें काफी प्रसिद्ध हैं। इस पहाड़ी पर मन्दिर के पीछे 10,000 साल पुराना एक प्राकृतिक तोरणम् (शिला तोरण) है। इस मुख्य देवता के अतिरिक्त मंन्दिर के अन्दर एवं चारों ओर मन्दिरों की शृंखला है - श्री गोविन्दराज स्वामी मन्दिर, राम मन्दिर, श्री

कालाहस्ती मन्दिर, (वायु मन्दिर तिरूपति से 36 कि.मी.) प्रसिद्ध चन्द्र गिरि की पहाड़ियाँ तिरूपति शहर से केवल 11 कि.मी. दूर हैं।

मन्दिर का संचालन एक ट्रस्ट द्वारा होता है। यह एक स्वायत्त संस्था है। परन्तु इसके कुछ सदस्य राज्य सरकार द्वारा नियुक्त होते हैं। यह एक बड़ा संगठन है एवं इसका प्रशासन बड़े स्तर पर होता है। इसके कार्यकर्ताओं की संख्या ही 15,000 है। यह ट्रस्ट प्रत्येक कार्य के लिये जिम्मेदार है एवं किसी भी तरह की जानकारी या सहायता के लिये इस ट्रस्ट से सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है।

पूजा विधि : धार्मिक अनुष्ठान सुबह 3.30 बजे से ही आरम्भ हो जाते हैं। उस समय की पूजा **सुप्रभातम्** कहलाती है। इसके बाद **तोमाला सेवा** एवं **सहस्त्राण वाच** सम्पन्न होता है। ये अनुष्ठान 6 बजे तक सम्पन्न हो जाते हैं। इस समय देवता को ताजे फूलों से सजाया जाता है। 6 से 7 बजे के बीच प्रसाद चढ़ाने का कार्यक्रम होता है। इस समय लोगों को मन्दिर गर्भ में आने की अनुमति दे दी जाती है एवं यह प्रवेश भुगतान के अनुसार (जो कि 1 रू से लेकर 200 रू तक का होता है) दिया जाता है । इसके पश्चात प्रवेश सबके लिये खोल दिया जाता है। मन्दिर के द्वारा **दर्शनार्थ** रात के 10.30 बजे तक खुले रहते है। रात के 10.30 बजे दूसरी **सेवा** सम्पन्न होती है जो एकान्त सेवा कहलाती है- अर्थात् यह धार्मिक अनुष्ठान ईश्वर के विश्राम के काल का प्रतीक हैं।

तिरूपोणकम् (पके खाने का चढ़ावा, **प्रसाद**) : यह मन्दिर में सम्पन्न धार्मिक अनुष्ठानों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 966 ई. में यह प्रसाद केवल चार **नली** (चावल) पका खाना होता था। इसकी मात्रा कुछ ही लोगों के लिये काफी होती थी जो वहां कार्य करते थे। तीर्थयात्रियों को मन्दिर के नौकरों से यह प्रसाद खरीदना पड़ता था। तीर्थयात्री भगवान को रेशमी कपड़े चढ़ाते हैं। बहुमूल्य आभूषण एवं वस्तुएँ भी भेंट स्वरूप चढ़ाई जाती हैं।

उत्सव : मन्दिर में **आदि ब्रह्मोत्सव** बड़े स्तर पर मनाया जाता है। इसकी ऐतिहासिकता 966 ई. में ढूंढी जा सकती है। चूंकि यह तीर्थयात्रियों को बड़ी संख्या में आकर्षित करने का महत्वपूर्ण केन्द्र है, इसलिये यहां **ब्रह्मोत्सवम् की संख्या** भी बढ़ गई है। समय के साथ अब हम लगभग 11 ब्रह्मोत्सवम् होने के बारे में सुनते हैं। ब्रह्मोत्सवम् के दो से बढ़कर 13 हो गये हैं। प्राचीन मूल ग्रन्थों में (1464 ई. तक) **वाहनम्** (रथ जिसमें भगवान की शोभा यात्रा निकलती है) का कोई भी प्रसंग नहीं मिलता। 1476 ई. में **वाहनम्** का उत्सवों में सबसे पहला प्रसंग मिलता है। इसके अतिरिक्त तमिल माह में मरगाली **अध्ययनोत्सवम** जोकि 21 दिन तक चलता है, मनाया जाता है। **तमिल प्रबन्धम** के श्लोकों को उच्चारित करते हैं। इसका पहला विवरण 1253 ई. में मिलता है। चित्तीरई माह में श्री गोविन्दराज मन्दिर में जो तिरूपति में है - तीन दिन **बसन्तोत्सव** मनाया जाता है। इसका सबसे पहला प्रसंग 1494 ई. में हमें मिलता है। 1522 ई. में हमें तिरूपति में **तिरूपति ओदाई तिरूनल** उत्सव का प्रसंग मिलता है, जो एक तैरने वाला उत्सव है जिसमें देवता को यात्रा के पश्चात एक तालाब में ले जाते हैं। संगीत और पटाखों के साथ वास्तव में यह उत्सव कोई **तिरूनल उत्सव** का ही निर्वाहक है। **रथ सप्तमी** उत्सव भी यहाँ मनाया जाता है। परन्तु यह तिरूमला पहाड़ियों पर अधिक भव्य रूप में मनाया जाता है जहाँ मुख्य देवता वास करते हैं। तिरूमला पहाड़ियों पर टी.वी. पर सुबह से लेकर शाम तक विभिन्न धार्मिक मनोरंजक कार्यक्रम दिखाये जाते हैं।

यातायात : तिरूपति वायु, रेल, एवं सड़क यातायात से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। वायु मार्ग से यह हैदराबाद, चेन्नई, विजयवाड़ा एवं बंगलुरू से जुड़ा हुआ है, जबकि रेल द्वारा यह सभी मुख्य राज्यों की राजधानियों से जुड़ा हुआ है। सड़क यातायात भी काफी विकसित

अवस्था में है। **आन्ध्र प्रदेश** राज्य परिवहन निगम की बसों द्वारा यह सभी आसपास के जिलों से जुड़ा है। तिरूपति में आटो, टैक्सी, एवं बसें सभी उचित दामों किरायों पर उपलब्ध हैं। बस सेवा काफी अच्छी है। तिरूमला के लिये हर मिनट पर बसें उपलब्ध हैं।

आवास : तिरूमला पहाड़ी पर रहने के लिये चार धर्मशालाएँ ट्रस्ट द्वारा उपलब्ध कराई गई हैं। ट्रस्ट द्वारा धर्मशाला परिधि में मुफ़्त भोजनं बाँटने की व्यवस्था भी है। इसके अतिरिक्त वहाँ कॉटेज, अतिथि गृह, होटल, एवं पर्यटक विश्राम गृह, आरामदायक ठहरने की जगहें हैं। आन्ध्र प्रदेश सरकार के पर्यटक सूचना अधिकारी III चौलसी तिरूपति में बैठते हैं। इसके अलावा, आन्ध्र प्रदेश सरकार के सूचना केन्द्र हैदराबाद, गोवा, नई दिल्ली, विजयवाड़ा, वारंगल, विशाखापटनम् एवं नागार्जुन सागर में हैं जहां से सूचना एकत्रित की जा सकती है।

खरीदारी : तिरूमला हिल्स एवं तिरूपति दोनों ही स्थानों में कई दुकानें हैं जहां से आन्ध्रप्रदेश की विभिन्न हस्तकलाएँ खरीदी जा सकती हैं। आन्ध्र प्रदेश सिल्क एवं सूती साड़ियों दोनों के लिए प्रसिद्ध है। ये आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा प्राधिकृत शोरूमों (लिपाक्षी आदि) में भी उपलब्ध हैं।

5.4.4 अजमेर : मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह

मुइनुद्दीन चिश्ती - चिश्ती सिलसिला के संस्थापक थे। 1192 ई. में भारत में उनका प्रव्रजन (migration) हुआ था। अन्त में वह अजमेर में जाकर 1206 में बस गये एवं उनका देहान्त सन् 1236 ई. में हुआ। गैर-मुसलमानों के प्रति अपने सहिष्णु विचारों के कारण इन्होंने हिन्दुओं एवं मुसलमानों दोनों का ही आदर प्राप्त किया। मुइनुद्दीन चिश्ती की **दरगाह** सल्तनत काल से ही एक पूजा स्थल की तरह एक महत्वपूर्ण तीर्थ रही है। सबसे पहला इस बात का अभिलिखित प्रमाण मुहम्मद बिन तुगलक का **दरगाह** पर जाने का मिलता है। तभी से तुर्की/मुगल बादशाहों के दरगाह पर जाने की परम्परा अक्षुण्ण बनी रही। अकबर का **दरगाह** पर 14 बार जाने का प्रमाण मिलता है। 17वीं शताब्दी तक **दरगाह** एक आकर्षक प्रतिष्ठान के रूप में रही जिसमें ढेर सारे कार्यकर्ताओं को चढ़ावे एवं उपहार दिए जाते थे। वहां कार्यकर्ताओं के लिये आवास की सुविधाएँ उपलब्ध थीं।

मुइनुद्दीन का मकबरा हुसैन नागौरी द्वारा बनवाया गया था। बाद में उसका **बुलन्द दरवाजा** सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी द्वारा बनवाया गया। इसके पश्चात् और भी कई मशहूर इमारतें मुगल बादशाहों (अकबर, शाहजहाँ, जहाँआरा बेगम) द्वारा बनवायी गयी। **दरगाह के अन्दर दो बड़ी लोहे की पकाने वाली "देगे" हैं**। इसमें बड़ी देग की क्षमता 70 मन चावल पकाने की एवं छोटी देग की क्षमता 20 मन चावल पकाने की है। इसके अतिरिक्त दरगाह के प्रशासन द्वारा गरीबों को दो समय **लंगरखाने** से खाना बाँटा जाता है । पका खाना बाँटा नहीं जाता बल्कि लूटने की प्रथा है। यह बहुत पुरानी प्रथा है जो कि अभी तक चली आ रही है परन्तु अब ये लूटने वाले अपना अंश बेच देते हैं एवं उससे उत्पन्न आय रख लेते हैं। सामान्य दिनों में लोग इन देगों में गहने या रूपये चढ़ाते हैं। मकबरे की परिधि में (**भिश्ती**) का भी मकबरा है जिसने हुमायूँ की जान बचाई थी।

हर साल **उर्स** (मुइनुद्दीन का मृत्यु दिवस) मनाया जाता है। इस समय अजमेर दूर-दूर से आये भक्तगणों से भरा रहता है। गानों (**sama**) के मध्य दर्शनार्थी सूफी संत भी अपने श्रृद्धा सुमन अर्पित करते हैं। आंकड़ों द्वारा पता चलता है कि 1879 में 20,000 तीर्थयात्रियों ने उर्स में भाग लिया था जो कि 1976 में बढ़कर 1 लाख हो गए। **उर्स** के समय दक्षिण अफ्रीका, यमन, इंग्लैण्ड, पाकिस्तान इत्यादि से भी तीर्थ यात्री यहां आते हैं। हिन्दू भक्त भी

बहुत बड़ी संख्या में यहां आते हैं। भक्तगण मकबरे पर सिर झुकाते हैं व इसे चूमते हैं तथा प्रार्थनाएँ होती हैं।

मकबरे के चारों ओर संगमरमर का जो जालीदार पर्दा है उस पर लोग अपनी इच्छापूर्ति के लिए धागा बाँधते हैं। इच्छापूर्ति के पश्चात यह धागे खोले जाते हैं। मकबरे पर गुलाब के फूल चढ़ाए जाते हैं। ज्यादातर भक्तगण **चादर** चढ़ाते हैं तथा परिक्रमा लगाते हैं। आदमी मकबरे के अंदर कुरान पढ़ते हैं व औरतें मकबरे से जुड़े एक स्थान पर **अरदत-ए-नूर** में नमाज़ पढ़ती हैं। अनुयायी चिल भी जाते हैं (जहाँ यह माना जाता है कि अजमेर शहर में आने के पहले वह यहाँ रहते थे) एक कोठरी, जहां उनके खलीफा अब्दुल कादिर जिलानी अपनी तपस्या करते थे। वह स्थान जहाँ मुइनुद्दीन का इंतकाल हुआ था खानगाह कहलाती है। तीर्थयात्री **मुइनुद्दीन** की दरगाह जो तारागढ़ की पहाड़ियों के नीचे है एवं चित्ला अब्दुल कादिर जिलानी भी जाते हैं (यद्यपि ये कभी भी भारत नहीं आये थे पर कहा जाता है कि एक फकीर जो बगदाद की यात्रा पर गया था मकबरे से दो ईटें लाया था)। खुद्दाम दरगाह के नौकर होते हैं जिनके काम मकबरे के धार्मिक अनुष्ठानों की देखभाल करना एवं तीर्थयात्रियों की देखरेख करना है। इन खुद्दामों का धार्मिक नेता सज्जादानशीन कहलाता है। इस कार्य को सँभालने वाला संत के परिवार का सदस्य ही हो सकता है दरगाह में सूफी संगीत को भी संरक्षण मिला हुआ है।

दरगाह की संचालन सम्बन्धी बातों का भी मनोरंजक इतिहास है। आरम्भिक दिनों में खुदाम एवं सज्जादानशीन सभी कार्यों का संचालन करते थे। अकबर के समय में एक **मुतावली-** एक धर्मनिरपेक्ष संचालक की नियुक्ति दरगाह के संचालन के लिये हुई। 1955 में दरगाह ख्वाजा साहब एक्ट के तहत केन्द्र सरकार हनीफ मुसलमानों में से 5 से 9 सदस्य की नियुक्ति करती है जो कि दरगाह से सम्बन्धित सभी बातों सा संचालन करते है।

कैसे जायें : अजमेर अरावली पहाड़ियों के मध्य बसा है। यह दिल्ली आगरा, जयपुर, अहमदाबाद, उदयपुर, आबूरोड़, एवं जोधपुर से सड़क एवं रेल यातायात द्वारा अच्छी तरह से जुड़ा है। सबसे पास का हवाई अड्डा जयपुर है। (लगभग 140 कि. मी.)।

मौसम : गर्मियों में अजमेर में बहुत गर्मी पड़ती है जबकि यह सर्दियों में बिल्कुल ठंडा रहता है।

आवास : राजस्थान पर्यटन विकास निगम का अपना पर्यटक बंगला है। खादिम पर्यटक बंगला सावित्री "गर्ल्स कॉलेज रोड़" हिल्स पर है। इसका अपना काउंटर अजमेर रेलवे स्टेशन पर है। इसके अतिरिक्त यात्रियों के रहने के लिये अनेक होटल भी हैं।

खरीदारी : गुलाब की पत्तियों का **इत्र** अजमेर की खासियत है। सारे राजस्थान के सभी तरह के सूती कपड़े एवं हस्तकला (राजस्थानी घाघरा, जूतियाँ, ब्लू पोटरी, लाख की चूड़ियाँ इत्यादि) यहां पाई जाती हैं।

बोध प्रश्न 2

1) आपका कोई मित्र यदि वैष्णोदेवी जाने की सोच रहा है तो आप आवास के लिये उसे क्या सलाह देंगे?

.....

.....

.....

.....

2) **मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह** पर होने वाले **उर्स** के बारे में एक टिप्पणी लिखिये।

.....

.....

.....

.....

.....

5.5 सारांश

हमारे पूर्वजों में प्राकृतिक दृश्यों के प्रति अभूतपूर्व दृष्टि थी। तीर्थस्थलों के लिये उन्होंने सुन्दर स्थान खोजे। धीरे-धीरे मुश्किलों के साथ शान्ति एवं सांत्वना पाने में प्राचीन विचारों में बड़ी तेजी से परिवर्तन आया। अब लोंगों को आराम की तलाश रहती है। तीर्थयात्रा में इस विशेष आवश्यकता "आराम" के कारण तीर्थ यात्रा की पूरी धारणा ही बदल गई है जिसका परिणाम "तृतीय क्षेत्र का विकास है। कुछ ऐसे भी तीर्थ स्थान हैं जो विशिष्ट रूप से तीर्थस्थल ही हैं परन्तु तीर्थ पर्यटन-उस स्थान की स्थिति के कारण-उसमें पवित्रता एवं आनन्द दोनों को बनाये रखने की क्षमता एवं स्थान रखता है।

5.6 शब्दावली

जियोपिटी : यह पवित्रता प्राप्त करने में मदद करने वाले भौतिक परिदृश्य से संबंधित है।

जादू : करामाती प्रयोजनों के लिए कहा जाने वाले शब्द

उर्स : एक दरगाह पर जयंती समारोह

5.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

भाग 5.2 देखें । विवेचना कीजिये कि पहले तीर्थ "मन की शान्ति" एवं "पवित्रता" के लिये होता था। अब पर्यटक तीर्थ में मनोरंजन एवं आराम ढूंढते हैं।

भाग 5.3 देखिये। विवेचना कीजिये कि तीर्थ पर्यटन क्षेत्र विशेष से सम्बन्धित है परन्तु फिर भी इसमें विकास की क्षमता है। प्रत्येक पर्यटक स्थल भारत में प्राकृतिक वातावरण (यात्री, समुद्र, जंगलों, पहाड़ों इत्यादि में) में स्थित हैं जिन्हें तीर्थस्थल एवं मनोरंजन दोनों के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है।

बोध प्रश्न 2

1) देखिये उपभाग 5.4.1

2) देखिये उपभाग 5.4.4

इकाई 6 समुद्रतटीय तथा द्वीपीय आरामगाह : कोवलम और लक्षद्वीप

इकाई की रूपरेखा

6.1 उद्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 आरामगाहों की उत्पत्ति एवं विकास

6.4 समुद्रतटीय एवं द्वीपीय पर्यटन की परिकल्पना

6.4.1 समुद्रतटीय पर्यटन

6.4.2 द्वीपीय पर्यटन

6.5 कोवलम समुद्रतटीय आरामगाह

6.5.1 इतिहास

6.5.2 आकर्षण

6.5.3 अन्य आकर्षण

6.5.4 आवास एवं खानपान

6.5.5 वहाँ कैसे पहुँचा जाये?

6.5.6 अन्य सुविधाएँ

6.5.7 भविष्य की योजनाएँ

6.6 लक्षद्वीप

6.6.1 भौगोलिक स्थिति

6.6.2 इतिहास

6.6.3 आकर्षण

6.6.4 अधिसंरचना

6.6.5 आवास व्यवस्था

6.6.6 वहाँ कैसे पहुँचा जाये?

6.6.7 पर्यटकों के लिए सुझाव

6.7 सारांश

6.8 शब्दावली

6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप जान सकेंगे :

- आरामगाहों की उत्पत्ति और उनका विकास;
- समुद्रतटीय तथा द्वीपीय पर्यटन की परिकल्पना; और
- समुद्रतटीय तथा द्वीपीय आरामगाहों के विकास में आने वाली बाधाओं के संबंध में जानकारी।

6.2 प्रस्तावना

सूर्य, समुद्र तथा रेतीले किनारों से संबंधित पर्यटन आज अधिक प्रचलित और लोकप्रिय हैं। आप देखेंगे कि इस प्रकार के पर्यटन का स्रोत समुद्री किनारे हैं। पानी से संबंधित विभिन्न प्रकार के आनंदों में आयी अचानक तेजी के कारण, पर्यटन के विकास में समुद्रतटीय तथा द्वीपीय पर्यटन के प्रचार-प्रसार को और अधिक प्रोत्साहन मिला है।

इस इकाई में सर्वप्रथम आरामगाहों की उत्पत्ति और विकास का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात समुद्रतटीय तथा द्वीपीय पर्यटन की परिकल्पना की चर्चा की गई है। इस प्रकार आरामगाहों के विकास में आने वाली विभिन्न व्यावहारिक समस्याओं की चर्चा लक्षद्वीप तथा कोवलम समुद्रतटीय आरामगाहों के संदर्भ में की गई है।

6.3 आरामगाहों की उत्पत्ति एवं विकास

विश्व परिप्रेक्ष्य में इन विशेष आरामगाहों के विकास का उल्लेख 17वीं एवं 18वीं सदी से मिलता है। कुछ विशेष स्थानों पर खनिज तत्वों से युक्त पानी की प्राप्ति तथा समुद्र के पानी में दवाई के गुण विद्यमान हैं, ऐसी मान्यता का होना ही इन आरामगाहों को अधिक महत्व दिये जाने के प्रमुख कारण रहे हैं। इस प्रकार ये आरामगाहें स्पा आरामगाहों के नाम से जानी जाती थीं। धीरे-धीरे ऐसे स्थानों पर खनिज तत्वों से युक्त पानी की तलाश में आने वाले मरीजों के आनंद और मनोरंजन के लिये अतिरिक्त सुविधायें जुटने लगीं। यूरोप में इस प्रकार की स्पा आरामगाहों के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार ऐसी मान्यता का आज भी महत्व है और वर्तमान समय में जर्मनी में बाडेन-बाडेन व मरियनस्के लाजने (मरियानबाद) तथा चेकोस्लोवाकिया में कारलोवी वोरी (कार्लस्लाड) सरीखी प्रमुख स्पा आरामगाहें ऐसे मरीजों से भरी पड़ी रहती हैं।

18वीं सदी के मध्य तक समुद्रीय पानी तथा समुद्र स्नान से स्वास्थ्य लाभ की संभावनाओं के कारण समुद्रतटीय आरामगाहों को स्थलीय स्पा आरामगाहों के विकल्प के रूप में पनपाने की ओर ध्यान दिया जाने लगा। स्थलीय तथा समुद्री स्पा आरामगाहें पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र थे।

19वीं शताब्दी तक इन स्पा आरामगाहों पर आवासीय व्यवस्था का विकास होने लगा। रेल यात्रा ने समुद्रतटीय आरामगाहों को जन साधारण की पहुंच में ला दिया। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक ऐसी आरामगाहों पर जाकर छुट्टियाँ बिताने व आराम करने की परिकल्पना निर्मित नहीं हुई थी। किसी भी आरामगाह में प्राकृतिक रूप से स्वास्थ्य सुधार के औषधिकारक गुणों के कारण इन आरामगाहों का अन्य क्षेत्रों में विकास हुआ। फ्रांस में रिवेरिया आरामगाह का अंग्रेजों में लोकप्रिय होने का प्रमुख कारण इसका टी.बी. के उपचार का प्रमुख केन्द्र होना था। वहीं बाद में इस प्रकार अनेक सेनेटोरियम स्विटजरलैंड में टी. बी. के मरीजों के लिये स्थापित किये गये।

अवकाश बिताने के पारम्परिक पर्यटक स्थलों की मांग बढ़ने का विशेष कारण मोटर-गाड़ियों का बढ़ता हुआ प्रयोग है। खनिज लवणों से युक्त इन प्राकृतिक झरनों द्वारा उपचार का महत्व बीसवीं शताब्दी के मध्य में कम होने लगा, अतः पारम्परिक पुराने प्रतिष्ठित स्पा आरामगाहें या तो समाप्त हो गयी हैं अथवा उनका स्वरूप बदलता जा रहा है। कार के प्रचलन ने गतिशीलता में वृद्धि की है। जिससे बड़े शहरों की दूरी इन आरामगाहों से काफी कम हो गई है।

आरामगाह क्या हैं?

आरामगाह वास्तव में पहाड़ी स्थल या समुद्र के किनारे एक होटल से कहीं अधिक होते हैं। यहाँ व्यापक सुविधाएँ उपलब्ध होनी चाहिये और अपने में एक पूर्ण विकसित स्थान होना चाहिए। आरामगाह अनेक प्रकारों की होती हैं और । भिन्न-भिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में स्थित होती हैं यथा, समुद्री आरामगाह, पहाड़ी आरामगाह, द्वीपीय आरामगाह, स्कीइंग आरामगाह, इत्यादि।

आरामगाहें युवा वर्गों को विभिन्न गतिविधियों संबंधी आनन्द प्रदान कर सकती हैं। आरामगाह विकास का चलन प्रायः मौसम पर आधारित होता है। आरामगाह विकास का चलन यूरोप, अमेरिका तथा कुछ दक्षिण अमेरिका के देशों में अधिक प्रखर हैं; परन्तु एशियाई देशों में आरामगाह को विकसित और प्रोत्साहित करने के लिए ज्यादा कुछ नहीं किया गया है। हालांकि हमारे देश में भी, विशेषकर इस क्षेत्र में निजी निवेशकों के प्रवेश के साथ, इस प्रकार की विशेष आरामगाहें काफी लोकप्रिय हो रही हैं।

बोध प्रश्न 1

1) स्पा आरामगाह क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) तटीय आरामगाह किस प्रकार विकसित होते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) फ्रेंच रिवेरिया आरामगाह की स्थापना के प्रमुख कारण क्या थे।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.4 समुद्रतटीय एवं द्वीपीय पर्यटन की परिकल्पना

अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन में समुद्र के किनारे तथा समुद्र के अन्दर द्वीपों में विकसित पर्यटन ने अपना एक विशेष स्थान बना लिया है। समुद्रतटीय तथा द्वीपीय पर्यटन अवकाशकालीन पर्यटन के महत्वपूर्ण भाग हैं और कई प्रकार से वे परस्पर जुड़े हुए भी हैं। दोनों प्रकार के पर्यटन में जलक्रीड़ा से संबंधित मनोरंजन की विस्तृत संभावनाएँ हैं। आज भी जबकि अवकाश मनाने के प्रकार तथा स्थलों में व्यापकता आ गई है, तथा आज भारी संख्या में लोग वर्ष में एक से अधिक बार लम्बी छुट्टियां बिताने जाते हैं ऐसी स्थितियों में समुद्र तट आमोद-प्रमोद व मनोरंजन के प्रमुख केन्द्र हो जाते हैं।

6.4.1 समुद्रतटीय पर्यटन

समुद्रतटीय पर्यटन विश्व के कई हिस्सों में पर्यटन के समग्र विकास का कारण बना। प्रति वर्ष गर्मी, ठंड तथा स्निग्ध गर्मियों में विश्व के प्रसिद्ध समुद्र तटों पर लाखों पर्यटक इकट्ठे होते हैं।

समुद्रतटीय पर्यटन समुद्री किनारों के सौन्दर्यात्मक तथा पर्यावरणीय महत्व का उपयोग करता है। इसके द्वारा जल और थल दोनों का मिश्रित उपयोग किया जाता है। जल के विभिन्न उपयोगों के तहत तैराकी, सर्फिंग, पालवाली विशेष नावों द्वारा नौकायन तथा जल में खेले जाने वाले अन्य खेल शामिल हैं। भूमि के उपयोग के अन्तर्गत की जाने वाली गतिविधियों के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की आवासीय व्यवस्थाओं (होटल, कुटीर, विला, कैम्पिंग साइट, बड़े वाहनों के ट्रेलर रखने के स्थान, आदि), आमोद-प्रमोद के क्षेत्र, खेल के मैदान, क्लब, मनोरंजन उद्यान, कार तथा बसों के लिए पार्किंग स्थल, मनोरंजन तथा खरीददारी के लिए व्यापार केन्द्र, सड़कें, आदि शामिल हैं। अन्य गतिविधियों के अन्तर्गत समुद्र तटों के समीप स्थित अन्य पर्यटन के महत्व के आकर्षण स्थलों की सैर को शामिल किया जा सकता है।

इस प्रकार समुद्रतटीय पर्यटन के विकास तथा प्रबंधन की समस्याएँ अनेक हैं। समुद्र तट पर स्थित आरामगाह को एक समग्रित इकाई के रूप में विकसित किया जाना चाहिये ताकि वह एक स्वतंत्र इकाई की तरह कार्य कर सके। पर्यावरणीय नियंत्रण के अन्तर्गत आरामगाहों पर बनने वाले विभिन्न निर्माणाधीन भवनों के आकार-प्रकार, ऊँचाई, यहाँ तक कि बाहरी रंग तथा उपयोग में लायी गयी भवन निर्माण सामग्री, पद्धति तथा वास्तुकला, आदि उसके आस-पास के वातावरण से सामन्जस्य रखती है अथवा नहीं? इसके संदर्भ में व्यापक नियम लागू किये जाने की आवश्यकता है। पर्यावरणीय प्रबंधन को यह बात सुनिश्चित करनी चाहिये कि समुद्रतटीय आरामगाह के व्यापक व संतुलित विकास के लिए उसके समीपस्थ भूमि स्थल पर सभी आवश्यक अधिसंरचना उपलब्ध हो ताकि आरामगाह का सुनियोजित विकास हो सके तथा पर्यावरणीय संतुलन भी बना रहे।

किसी भी समुद्री किनारे को एक समुद्रतटीय आरामगाह के रूप में विकसित करने के लिए जो प्रारंभिक मूल तत्वों की आवश्यकता होती है वही एक द्वीपीय आरामगाह के विकास के लिए भी लागू होती है।

- समुद्र तट तथा तट के आसपास का पानी अच्छे स्तर का होना चाहिये ताकि पर्यटक इसका उपयोग नहाने, सूर्य स्नान, तैराकी तथा पानी से संबंधित अन्य आमोद-प्रमोद के लिए कर सकें।

- समुद्र तट पर्याप्त बड़ा होना चाहिये ताकि वहाँ बिना भीड़-भाड़ के भारी संख्या में लोग एकत्रित हो सकें।
- समुद्र के किनारे पर पर्याप्त रेत होनी चाहिये जो दिखने में सुन्दर और स्पर्श में मुलायम हो। वह कंकड़-पत्थर, प्रवाल तथा अन्य कूड़ा-करकटों से मुक्त होनी चाहिये।
- समुद्र का रेतीला किनारा धीरे-धीरे पानी में प्रवेश करे तथा सरलता व सुरक्षित ढंग से तट से पानी में घुसे और निकले। तट पर समुद्री पानी साफ, हल्का गर्म तथा तट पर लौटने वाली लहरें समुद्र से कम गति से लौटने वाली हों ताकि वह स्थान नहाने और तैरने के साथ जलक्रीड़ा से संबंधी गतिविधियों के लिए भी सर्वथा उपयुक्त हो।
- आरामगाह के आसपास सुन्दर प्राकृतिक दृश्यावली होनी चाहिये तथा उसका निर्माण व विकास भी प्राकृतिक रूप से होना चाहिये ताकि वह भी प्रकृति का एक अटूट हिस्सा दिखाई पड़े।
- आरामगाह का सम्पूर्ण वातावरण अपने आप में औरों से अलग तथा उसकी प्रकृति अन्य प्रतिस्पर्धात्मक पर्यटन स्थलों से भिन्न होनी चाहिये, विशेषकर आमोदः प्रमोद प्रदान करने वाली पर्यटन गतिविधियों के संदर्भ में।
- समुद्रतटीय आरामगाह की जलवायु और वातावरण ऐसा होना चाहिये कि लगभग पूरे वर्ष पर्यटक वहाँ जाकर ठहर सकें और घूम-फिर सकें। एक समुद्रतटीय आरामगाह के आदर्श वातावरण में दिन को अधिक समय तक तेज धूप निकली हो, तापमान साधारण गर्म हो, आर्द्रता कम हो तथा हर समय ठंडी हवाओं के झोंके चलते रहें।
- जहाँ तक संभव हो आरामगाह तक अधिक से अधिक लोगों के पहुंचने के लिए वायुमार्ग तथा परिवहन के अन्य साधनों की सुविधा होनी चाहिये।
- आरामगाह सीधी, सुन्दर दृश्यावलियों वाले सड़क मार्ग के माध्यम से एयरपोर्ट, आबादी वाले शहरों तथा समीपस्थ पर्यटन केन्द्रों से जुड़ी होनी चाहिये।
- आरामगाह में प्राप्त पेयजल, विद्युत, दूर-संचार तथा जल-मल की निकासी के लिए भी पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिये।
- आरामगाह का क्षेत्रफल भविष्य में की जाने वाली विकसित योजनाओं के लिए पर्याप्त होना चाहिये।
- आरामगाह में नियमित आपूर्ति का होना आवश्यक है तथा बिजली से चलने वाले उपकरणों के रख-रखाव की भी पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिये क्योंकि प्रायः समुद्र तटों पर हवा के नमक की अधिकता के कारण वहाँ धातुओं में जंग जल्दी लग जाती है।
- पर्याप्त संख्या में प्रशिक्षित जीवन रक्षक गाइडों का होना भी आवश्यक है।

इस विषय में प्राप्त आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि इस प्रकार की आरामगाहें उन पर्यटकों को अधिक आकर्षित करती हैं जो लम्बी अवधि तक रुकना चाहते हैं। अतः लम्बी अवधि तक उन्हें रोके रखने का कार्य, ताकि उनकी रुचि बनी रहे, एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। अतः ऐसी, आरामगाहों में रोमांचक खेलों, गैर-मैदानी खेलों, मनोरंजन के अन्य साधनों, अच्छी शराब से युक्त मधुशालाएं, योग, आयुर्वेदिक तथा प्राकृतिक तरीके से स्वास्थ्यवर्धन के लिए केन्द्र होने चाहिये।

ऐसी आरामगाहों पर अच्छे स्तर की सुरक्षा व कड़े नियंत्रण की व्यवस्था भी होनी चाहिये। एक पर्यटक की पर्याप्त सुरक्षा तथा देखभाल का उत्तरदायित्व आरामगाह का है। ऐसे समुद्री

तटों पर प्रायः भारी संख्या में अनौपचारिक पर्यटक भी पहुंच जाते हैं अतः वहाँ पर्यटकों की सुरक्षा के लिए पर्याप्त सुविधा व व्यवस्था होनी चाहिये क्योंकि समुद्र के लम्बे फैले किनारों की सीमाबंदी करना संभव नहीं है।

6.4.2 द्वीपीय पर्यटन

पर्यटकों को यात्रा करने के लिए द्वीप हमेशा आकर्षक लगते हैं। द्वीपों के प्रति पर्यटकों के आकर्षण का एक प्रमुख कारण भीड़ एवं कोलाहल से दूर शांतिपूर्ण स्थान की इच्छा है जो कि समन्वित रूप से द्वीपों में ही मिल सकती है।

द्वीपीय पर्यटन कुछ हद तक शहरों में स्थित प्रमुख पर्यटन स्थलों पर पड़ने वाले दबाव को कम करने में सहयोगी सिद्ध होता है। चूंकि द्वीपों में व्यापक औद्योगिक विकास की संभावना नहीं रहती है। अतः द्वीपों के सर्वांगीण विकास के लिए पर्यटन सहायक सिद्ध हो सकता है। विभिन्न गतिविधियों पर आधारित पर्यटन भी आजकल बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं जिनके विकास के लिए द्वीप आदर्श स्थान है।

यहाँ यह बात स्वीकार करनी चाहिये कि द्वीपीय पर्यटन के विकास में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। उदाहरण के लिए, एक द्वीपीय आरामगाह में पर्यटकों को भारी संख्या में झेलने की क्षमता नहीं होती है अतः ऐसी स्थिति में द्वीप की स्थानीय क्षमता पर भारी दबाव पड़ेगा। यह कठिनाई द्वीपों की भौगोलिक स्थिति तथा प्राकृतिक संसाधनों, तथा बिजली तथा पेयजल की सीमित मात्रा में उपलब्धता के कारण रहती है। चूंकि द्वीपों का पर्यावरण संतुलन जल्दी खराब होने का डर होता है। अतः यहाँ पर्यावरण नियंत्रण बहुत अधिक आवश्यक है और यह नियंत्रण अधिसंरचना के निर्माण, जल-मल की पर्याप्त निकासीय व्यवस्था, परिवहन के साधनों, आमोद-प्रमोद की गतिविधियों व प्रकार के संबंध में किया जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त द्वीपों में विकासीय योजनाओं पर अपेक्षाकृत अधिक धन व्यय करना पड़ता है क्योंकि द्वीपों में विकास के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं होते हैं इसलिये निर्माण कार्य वहाँ अपेक्षाकृत अधिक महंगा होता है।

एक अन्य महत्वपूर्ण बात स्थानीय लोगों का पर्यटकों के प्रति अपनाया गया रुख तथा उन्हें स्वीकार करने की प्रवृत्ति भी है जो कि अपने आप में एक नाजुक बिन्दु है। छोटे द्वीपों में यह संवेदनशीलता अपेक्षाकृत अधिक बढ़ जाती है। अतः द्वीपों के स्थानीय सहवासियों को इस प्रकार की गतिविधियों में अधिकाधिक भागीदारी देनी चाहिये ताकि पर्याप्त समन्वय हो सके। इस बात पर भी ध्यान दिया जाना चाहिये कि पर्यटन तथा स्थानीय निवासियों की कला को बढ़ाने के लिए पर्याप्त महत्व व विशेष प्रशिक्षण दिया जाये। अतः द्वीपों में रहने वाले स्थानीय निवासियों के अपने परम्परागत स्वरूप तथा अलग रहने की प्रवृत्ति के कारण ऐसे संवेदनशील पर्यटन स्थलों पर पर्यटन के कारण पड़ने वाले सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का बहुत बारीकी से अध्ययन कर उसे नियंत्रित किया जाना चाहिये।

अतः द्वीपीय पर्यटन की संयोजना में निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिये :

- भौगोलिक विशेषताएँ,
- ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं वैधानिक कारक,
- पर्यावरणीय कठिनाइयाँ-विशेषकर संबंधित आरामगाह की पर्यटकों को समायोजित करने की क्षमता,
- अधिसंरचना का यथेष्ट विकास तथा आवास व्यवस्था के प्रकार, खान-पान की व्यवस्था, द्वीप के अन्दर तथा द्वीप तक पहुंचने लिए परिवहन के साधनों की व्यवस्था तथा खेल एवं आमोद-प्रमोद की सुविधा, और

- बिजली, दूर संचार के साधनों एवं पेयजल की सुविधा।

समुद्रतटीय और द्वीपीय पर्यटन के विकास में आने वाली विकासीय बाधाओं का विधिवत् विस्तृत अध्ययन, दो प्रमुख आरामगाहों कोवलम तथा लक्षद्वीप को लेकर किया गया है जिसका विवरण आगे दिया गया है।

बोध प्रश्न 2

1) किसी समुद्री किनारे को एक समुद्रतटीय आरामगाह के रूप में विकसित करने के लिये चार प्रमुख अनिवार्य शर्तों का उल्लेख कीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

2) द्वीपीय पर्यटन के विकास में कौन-कौन सी प्रमुख बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

.....

.....

.....

.....

.....

3) एक द्वीपीय आरामगाह के विकास की योजना बनाते समय किन-किन प्रमुख बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिये।

.....

.....

.....

.....

.....

6.5 कोवलम समुद्रतटीय आरामगाह

भारत के दक्षिण-पश्चिमी किनारे पर अरब सागर से सटा हुआ करीब 40,000 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में फैला हुआ केरल राज्य है। केरल का समुद्र तट भारत के सबसे बढ़िया समुद्र तटों में से एक है। पौराणिक कथाओं के अनुसार केरल का समुद्र से संबंध वैसा ही है जैसा कि एक माँ-बच्चे का होता है। एक किंवदन्ती के अनुसार भगवान परशुराम ने हजारों क्षत्रियों की हत्या के बाद पश्चाताप स्वरूप जब अपना फरसा समुद्र में फेंका तब समुद्र से पृथ्वी का जो भाग उभर कर बाहर आया वही केरल है। समुद्र ने उस भूमि को अभयदान दिया और उस बंजर भूमि को लहलहाते, चमकदार, हरे-भरे उपजाऊ प्रदेश केरल के अस्तित्व का आशीर्वाद दिया।

कोवलम एक छोटी सी शांत समुद्रतटीय आरामगाह है जो केरल प्रदेश के दक्षिणी कोने पर, केरल की राजधानी तिरुवनन्तपुरम (पूर्व नाम त्रिवेन्द्रम) से 16 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ हम कोवलम की देश के प्रसिद्धतम समुद्रतटीय आरामगाह के रूप में विकास के बारे में चर्चा करेंगे।

6.5.1 इतिहास

तीन दशक पूर्व कोवलम को कोई नहीं जानता था। यह स्थान मात्र मछली पकड़ने वाला एक छोटा सा साधारण गाँव था जहाँ सिर्फ कुछ मछुआरों की बस्ती थी। महाराजा ट्रावनकोर ने इस गाँव को अपने हाथ में लिया और स्वयं के आमोद-प्रमोद के लिए एक सुन्दर आरामगाह बनायी। इस प्रकार कोवलम की पहचान महाराज ट्रावनकोर के लिए गर्मी व्यतीत करने की आरामगाह के रूप में होने लगी। कोवलम की एक ऊंची पहाड़ी पर बना हालकोयान महल, जहाँ से सामने दूर-दूर तक फैले अरब सागर का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है, कभी महाराजा ट्रावनकोर का निवास हुआ करता था। ट्रावनकोर राज्य परिवार के एक सदस्य माननीय कर्नल गौडा वर्मा राजा ही वे व्यक्ति थे जो इस प्रसिद्ध समुद्र के वर्तमान विकास और प्रसिद्धि के लिए उत्तरदायी हैं।

इस स्थान पर वर्ष 1973 में भारतीय पर्यटन विकास निगम द्वारा पाँच सितारा कोवलम अशोक बीच रिसोर्ट के निर्माण के साथ ही पहली बार कोवलम में व्यावसायिक पर्यटन के विकास का श्रीगणेश हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय एवं देशी पर्यटकों की लगातार बढ़ती संख्या को देखते हुए भारतीय पर्यटन विकास निगम ने अशोक बीच रिसोर्ट में पांच सितारा सुविधायुक्त 72 कमरे और जोड़े। लगभग इसी समय निजी क्षेत्र ने भी होटल उद्योग में अपनी पूंजी लगाना प्रारंभ किया। संयुक्त राष्ट्र संघ की एक पर्यटन विशेषज्ञ समिति जब कुछ वर्षों पूर्व अपने भारत भ्रमण पर आयी थी उस समिति ने कोवलम को एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की समुद्री आरामगाह के रूप में विकसित करने की अनुशंसा की थी।

प्रति वर्ष मई से लेकर अगस्त के महीनों में जब वर्षा, तेज हवा और समुद्र अशांत रहता है, सागर तट पर विभिन्न गतिविधियाँ रुकी रहती हैं अन्यथा कोवलम सारे वर्ष खुली एक आदर्श समुद्रतटीय आरामगाह है। यहाँ न्यूनतम औसत तापमान 20 डिग्री सेन्टीग्रेड तथा अधिकतम 30 डिग्री सेन्टीग्रेड रहता है।

6.5.2 आकर्षण

कोवलम पांच विभिन्न समुद्र तटों से मिलकर बना है :

1) मुख्य समुद्र तट कोवलम है, जिसके नाम से इस स्थान को जाना जाता है। यह भारतीय पर्यटन विकास निगम द्वारा निर्मित की गयी कुटीरों (cottages) के सामने स्थित है और केरल पर्यटन विकास निगम के होटल "समुद्र तक फैला हुआ है। अनुमानतः इस समुद्र तट की लम्बाई 300 मीटर है।

2) तिरुवनन्तपुरम् के संकुमुघम समुद्र तट के पास वालियाथुरा तक फैले हुए समुद्र तट को पनथुरा समुद्र तट का नाम दिया गया।

3) कोवलम के बस स्टाप से दक्षिण-पूर्व दिशा में अम्बालम समुद्र तट है।

4) लाइट हाउस के समीप के तट को, जो लाइट हाउस समुद्र तट के नाम से भी पुकारा जाता है, अवधूथुरा तट कहा जाता है।

5) चेरियामान्नु समुद्र तट होटल रॉकहोम तथा इन्सपेक्शन हाउस के बीच फैला हुआ है।

कोवलम को कई कारणों से देश का सर्वश्रेष्ठ समुद्र तट माना जाता है। यहां पानी बहुत स्वच्छ एवं साफ है तथा जलक्रीड़ा से संबंधित अनेक खेलों यथा स्नोरकेलिंग, नौका चालन तथा वाटर स्कीइंग के लिए यह स्थान सर्वथा उपयुक्त है। समुद्र में ज्यादा दूरी तक अन्दर जाने की सलाह नहीं दी जाती है बशर्ते आप उस समुद्र तटीय क्षेत्र की प्रकृति व भूगोल से पूर्णतः भिज्ञ हों। भारतीय पर्यटन विकास निगम द्वारा निर्मित कोवलम अशोक बीच रिसोर्ट परिसर में जलक्रीड़ा से संबंधित विभिन्न रोमांचक खेलों के साथ-साथ गोल्फ तथा टेनिस खेलने की भी सुविधाएँ हैं। यहाँ उपलब्ध खुले भूमि स्थल इस प्रकार प्राकृतिक रूप से निर्मित हैं कि बड़ी-बड़ी पहाड़ियों से घिरे समुद्र तट का पानी अन्दर चला आया है जिससे छोटी-छोटी खाड़ियाँ बन गयी हैं जो नारियल के पेड़ों से घिरी हुई हैं। घाटियों के मुख्य समुद्र तट के मार्ग की पहुंच में न होने के कारण इन स्थानों पर अपार शांति, नीरवता व निर्जनता है।

स्थानीय मछुआरों के साथ छोटी-छोटी कम गहरी डोंगियों में जिसे "कैटामैरान्स'' कहा जाता है, समुद्र में दूर तक जाना सिर्फ उन्हीं पर्यटकों के लिए उपयुक्त है जो कुछ रोमांच का अनुभव करना चाहते हैं। भारत के दक्षिणी ओर पर स्थित अरब सागर की मचलती, गर्जती, तूफानी लहरों पर डोंगियों की सवारी पर समुद्र यात्रा करना अपने आप में एक अनोखा, अविस्मरणीय अनुभव हो सकता है। शाम के समय पर्यटक स्थानीय व्यक्तियों के साथ समुद्री वालीबाल और फ्रिसबी खेल सकते हैं।

अनेक मछली पकड़ने के शौकीन कोवलम के समुद्री पानी की सुन्दरता की कसमें खाते हैं। यहाँ विभिन्न प्रकारों की मछलियों की बहुतायत है और यदि आप एक अनुभवी मछलीमार हैं तो हर रोज आप खुद हाथ से मछली का शिकार करके स्थानीय रेस्तरां वालों से अनुरोध कर सकते हैं कि वे आपके लिए उसे पका दें। समुद्र में मिलने वाले भोज्य पदार्थ चूंकि स्थानीय क्षेत्रीय भोजन की प्रमुख विशेषता है अतः मुंह में पानी लाने वाले अनेक समुद्री व्यंजन भोजन प्रेमियों को यहाँ प्राप्त होते हैं।

पर्यटक यहाँ योग केन्द्र में योगाभ्यास भी कर सकते हैं अथवा उपलब्ध स्वास्थ्य केन्द्र में औषधियुक्त आयुर्वेदिक तेल की बढ़िया मालिश करवा सकते हैं। कोवलम में उपलब्ध योग व स्वास्थ्य केन्द्र में विशेषज्ञ योग और पराआध्यात्मिक ध्यान के बारे में भी प्रशिक्षण देते हैं। योग एवं आयुर्वेदिक मालिश की सुविधाओं ने अन्य समस्त समुद्रतटीय आरामगाहों की तुलना में कोवलम को सर्वश्रेष्ठ समुद्र तट बना दिया है। अवर्णनीय भव्य सूर्यास्त और मंदिरों के प्रांगण में मंद रोशनी में खुले मंच पर कत्थकली नृत्य का अवलोकन आपके कोवलम में बिताए दिन की सुखद, शानदार, अविस्मरणीय समाप्ति।

6.5.3 अन्य आकर्षण

सूर्यास्त के बाद बीस मिनट की मोटर यात्रा से सड़क मार्ग द्वारा आप तिरुवनन्तपुरम् वापस पहुंच सकते हैं। राज्य की यह आकर्षक राजधानी समुद्र के किनारे बसा शहर है जो सात पहाड़ियों पर स्थित है। तिरुवनन्तपुरम् में चारों ओर फैली पहाड़ियाँ अपना एक राजसी महत्व दर्शाती हैं जो पूर्व में महाराजा ट्रावनकोर की राजधानी होने के महत्व से साम्य रखती हैं। आज भी यहां अनेक महल राज परिवार के सदस्यों के रहने के स्थान हैं जहां आम पर्यटक के प्रवेश की मनाही है।

तिरुवनन्तपुरम् से 53 कि.मी. की दूरी पर स्थित पद्मनाभपुरम् महल अपने काष्ठ वास्तुशिल्प के कारण काष्ठ कला के निर्माण के विशेष रोचक अध्ययन का विषय है। तिरुवनन्तपुरम् में ही स्थित नेपियर म्यूजियम तथा उसके अहाते में निर्मित प्राणि तथा वनस्पति जुओलाजिकल एवं बॉटेनिकल गार्डन तथा चिड़ियाघर सोमवार को छोड़कर सप्ताह के शेष दिनों में सुबह

9 बजे से पर्यटकों के लिए खुला रहता है। पर्यटकों को नेपियर संग्रहालय में संकलित विभिन्न कलात्मक कलाकृतियों, आभूषणों, कांसे की बनी मूर्तियों, पत्थर की मूर्तियों तथा प्राचीन संगीत के वाद्य उपकरणों के दर्शन के माध्यम से तत्कालीन महाराजाओं के व्यक्तिगत जीवन का अवलोकन करने का मौका मिलता है।

संग्रहालय तथा उसके समीपस्थ चिड़ियाघर के परिसर में स्थित चित्रा आर्ट गैलरी में एक पूरा कक्ष महान् चित्रकार राजा रवि वर्मा को समर्पित है। जहाँ विश्व के कोने-कोने से पुराने और आधुनिक चित्रों को संग्रहित किया गया है। तिरुवनन्तपुरम् अपने प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य कत्थकली के अतिरिक्त अनेक पारम्परिक हस्तशिल्पों के लिए भी प्रसिद्ध है। बैल मैटल के बने दीपक, हाथी दाँत के कलात्मक सामान तथा काष्ठ कला, हस्तशिल्प की वस्तुएँ तथा शंकुकार चीड़ फलों, पत्तों और शंखों से बने अनेक कलात्मक प्रतीक चिन्ह व कलाकृतियाँ पर्यटकों द्वारा खरीदी जा सकती हैं।

स्थानीय लोगों द्वारा नावों को जल क्रूज से आकर्षकता से जोड़ा गया। यह तिरूवनन्तपुरम में उपलब्ध है और एक गाँव का चक्कर लगाता है जहाँ पर्यटक को उष्णकंटिबंधीय पौधे और मसाले बनाते देख सकते हैं।

6.5.4 आवास एवं खान–पान

अरब सागर की उन्मत्त लहरों को देखते हुए एक प्राकृतिक पहाड़ी पर निर्मित भारतीय पर्यटन विकास निगम की कोवलम में बनी इकाई सबसे बड़ी आवासीय इकाई है। अशोका होटल के सामने निर्मित और स्थित पुराने हालकोयान महल को अब एक डीलक्स होटल में परिवर्तित कर दिया गया है। ठीक समुद्र तट पर एक अन्य सर्व-सुविधायुक्त पामग्रोव बीच कॉटेज बनी हुई है। मुख्य होटल अशोक कोवलम पहाड़ी पर निर्मित है। समुद्र से लगे इस दो मंजिला होटल में 72 कमरे हैं। हर कमरे से समुद्र दिखाई देता है और हर कमरे में सूर्य स्नान के लिए मंच बना हुआ है।

केरल पर्यटन विकास निगम का एक दो सितारा होटल "होटल समुद्र" है। इसके अतिरिक्त वहाँ अनेक निजी होटल तथा पेइंग गेस्ट की सुविधा भी है। विभिन्न प्रकार का रुचिपूर्ण भारतीय और यूरोपीय खाना कोवलम में मिलता है। लेकिन यहाँ का सबसे बड़ा आकर्षण नारियल में बना केरल का स्थानीय भोजन है। ताजा समुद्री भोजन केरल के भोजन की मुख्य विशेषता है। गर्म टॉडी के स्वाद वाले पैनकेक, रस भरे अनन्नास, करारे तले हुए कटहल के चिप्स, टापिओका और केले सभी के मुंह में पानी ला देने वाले हैं।

कोवलम में आवास प्रदान करने वाले प्रमुख होटल ह, के टी डी सी समुद्रा, ट्रीबो वाटर्स एज, सोमा पालमशोर ओशन पार्क बीच रिजॉर्ट, टर्टल ऑन द बीच द ताज ग्रीन कोव रिजॉर्ट, स्पा कोवलम, द लीला कोवलम विल्सन आयुर्वेदिक बीच रिजॉर्टस। इनके अलावा गंतव्य होटल प्रदान करता है और उचित कीमतों पर होमस्टे।

6.5.5 वहाँ कैसे पहुँचा जाये?

हवाई जहाज से: त्रिवेंद्रम एक अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा यहाँ से 15 कि.मी. की दूरी पर है। त्रिवेंद्रम के लिए बम्बई, मद्रास, त्रिचनापल्ली भारत के तमाम बड़े शहरों व अन्तर्राष्ट्रीय शहर जैसे कि सिंगापुर से हवाई मार्ग द्वारा जुड़ा है।

रेल मार्ग से: देश के लगभग सभी प्रमुख बड़े शहर रेल मार्ग द्वारा त्रिवेंद्रम से जुड़े हुए हैं।

सड़क मार्ग से: सड़क मार्ग से आसानी से कोवलम पहुँचा जा सकता है। केरल राज्य सड़क

परिवहन निगम द्वारा त्रिवेंद्रम से चेन्नई, मदुरई, बंगलुरू तथा कन्याकुमारी तक सीधी बसें चलती हैं।

स्थानीय परिवहन व्यवस्थाः केरल पर्यटन राज्य विकास निगम की परिवहन शाखा के अतिरिक्त निजी ऑपरेटर्स के द्वारा भी कोचेस तथा टैक्सी सेवाएं उपलब्ध हैं। शहर में घूमने के लिए ऑटो रिक्शा तथा टैक्सियाँ भी आसानी से उपलब्ध हैं।

6.5.6 अन्य सुविधाएँ

इसमें सम्मिलित हैं :

- **पर्यटन सूचना केन्द्र** केरल राज्य के पर्यटन विभाग का पर्यटन सूचना केन्द्र होटल अशोक कोवलम बीच रिजुर्ट में स्थित है।
- **सैन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया** की एक शाखा कोवलम जंक्शन में है तथा इसकी अतिरिक्त शाखा भारतीय पर्यटन विकास निगम के होटल अशोक में है जो विदेशी मुद्रा विनिमय का कार्य करती है।
- सरकार के टेलिकाम केन्द्र ने 1991 से काम करना प्रारम्भ कर दिया है। इसके माध्यम से एस.टी.डी.य आई.एस.डी., स्थानीय काल, ट्रंककाल, टैलेक्स तथा फैक्स की सुविधाएं उपलब्ध हैं। यह कार्यालय प्रतिदिन सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक कार्यरत रहते हैं। इसके अतिरिक्त यहां दो निजी एस.टी.डी. बूथ भी कार्यरत हैं।
- **आयुर्वेदिक मसाज केन्द्र** भारतीय पर्यटन विकास निगम के परिसर में स्थापित है। इसके अतिरिक्त कोवलम में ऐसे अनेक मसाज केन्द्र हैं।
- **स्वास्थ्य संबंधी सेवाएं :** कोवलम में कोई सरकारी अस्पताल नहीं है। यहां एक काफी बड़ा निजी अस्पताल है "उपासना क्लीनिक"। इसके अतिरिक्त अनेक छोटे-छोटे उपचार केन्द्र भी हैं। हालांकि कोवलम से 20-30 मिनट की दूरी पर स्थित राजधानी शहर तिरुवनन्तपुरम् में स्वास्थ्य संबंधी सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं।
- **पोस्ट आफिसः** समुद्र तट से 2 कि.मी. की दूरी पर पोस्ट ऑफिस उपलब्ध है।
- **पर्यटक पुलिस :** पर्यटकों की सुरक्षा और देखभाल के लिए विशेष प्रशिक्षित पुलिस सेवा रात्रि 8 बजे तक सागर तट पर उपलब्ध रहती है। इसके अतिरिक्त सुबह 8 बजे से रात्रि 8 बजे तक समुद्र में दुर्घटना से बचाने के लिए प्रशिक्षित जीवन-रक्षक भी सागर तट पर तैनात रहते हैं।
- **जीवन-रक्षक** भी सागर तट पर तैनात रहते हैं।

6.5.7 भविष्य की योजनाएँ

कोवलम समुद्र तट पर उपलब्ध सुविधाएं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर से अपर्याप्त हैं। कोवलम में पर्यटकों के लिए समुद्र तट का उपलब्ध इलाका बहुत कम है क्योंकि यहां आसपास घनी आबादी वाला क्षेत्र है। यहां की ज्यादातर कठिनाइयाँ तथा समस्याएं समुद्र तट के अनियोजित विकास के कारण हैं।

इस अनियोजित विकास के कारण ही समुद्री तट पर अनेकों होटलों के निर्माण को बढ़ावा मिला है। तथा इन होटलों की क्षमता एक चार्टर यात्रा के यात्रियों को समायोजित करने की भी नहीं है। समुद्र तट पर पर्यटकों के लिए उपलब्ध रेतीला क्षेत्र सिकुड़ कर कम हो गया है क्योंकि समुद्र के किनारे बने अनेक रेस्तराओं ने समुद्र तट का अतिक्रमण कर लिया है।

सुन्दर समुद्री तट केरल राज्य की अमूल्य धरोहर है अतः राज्य सरकार समुद्री तटों को और अधिक बढ़ाने व विकसित करने का प्रयास कर रहा है। कोवलम पूरे देश में अपने आप में पर्याप्त सुविधायुक्त द्वीपीय आरामगाह है। इसने अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में अपनी एक विशिष्ट साख भी स्थापित कर ली है। इसके अतिरिक्त यह एक अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के समीप स्थित है। कोवलम की साख बढ़ाने के लिए निम्नलिखित योजनाएं विचाराधीन हैं :

- मध्यम आय-वर्ग के होटलों का स्तर तथा सेवाओं में सुधार लाना।
- बेहतर पर्यावरणीय नियंत्रण को लागू करना।
- जलक्रीड़ा सुविधाओं को बेहतर बनाना।
- पर्यटकों की पर्याप्त सुरक्षा।
- समुद्र तट का उपयुक्त रख-रखाव।
- पर्यटकों को अच्छे स्तर की सुविधाएँ उपलब्ध कराने के महत्व के संबंध में स्थानीय लोगों को अधिक शिक्षित व जागरूक करना।

बोध प्रश्न 3

1) कल्पना कीजिए कि आप एक पर्यटन अधिकारी या टूर ऑपरेटर हैं तो आप कोवलम आने वाले पर्यटकों को वहां के कौन से आकर्षण स्थल दिखलाएंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

2) कोई कोवलम तक किस तरह पहुँच सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) कोवलम में रहते हुए पर्यटक कोवलम के अतिरिक्त और क्या-क्या देख सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

6.6 लक्षद्वीप

लक्षद्वीप केरल के समुद्र तट से पश्चिम में 8 डिग्री और 12 डिग्री अक्षांश तथा 71 डिग्री और 74 डिग्री देशांतर के बीच स्थित है। लक्षद्वीप देश का सबसे छोटा केन्द्र शासित क्षेत्र है और पूरे भारत में इकलौता प्रवाल (coral) द्वीप। केरल के समुद्रतटीय नगर कोचीन से यह 220

से 440 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। इस द्वीप में पर्यटन की प्रखर संभावनाएँ हैं। हम इनके बारे में नीचे वर्णन करेंगे।

6.6.1 भौगोलिक स्थिति

लक्षद्वीप का समुद्र लक्षद्वीप को मालाबार पहाड़ियों से अलग करता है और लक्षद्वीप सागर की तलहटी से 2000 से 2700 मीटर तथा अरब सागर के समुद्र तल से 4000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। अमीनी तथा कदमात के प्रमुख द्वीप तथा कुछ अन्य छोटे द्वीप तथा उपद्वीपों को छोड़कर अधिकांश द्वीप समीपस्थ द्वीप से 20 से लेकर 67 समुद्री मील की दूरी पर स्थित हैं। मिनीकाय द्वीप भौगोलिक दृष्टि से उत्तर लक्षद्वीपों की तुलना में मालदीव द्वीपसमूह के ज्यादा समीप है। एन्ड्रोथ द्वीप को छोड़कर प्रायः अन्य सभी द्वीप उत्तर-दक्षिण दिशा में है जबकि एन्ड्रोथ पश्चिम-पूर्व दिशा में है। उपरोक्त द्वीप की पश्चिम दिशा से आने वाले तूफानी समुद्री थपेड़ों से मानसून के समय प्रवाल की दीवार रक्षा करती है।

लक्षद्वीप की जलवायु ऊष्णकटिबन्धीय है। गर्मियों में यहां का तापमान 20 डिग्री सेन्टीग्रेड से 35 डिग्री सेन्टीग्रेड के बीच होता है। 15 मई से 15 सितम्बर के बीच वर्षा के मौसम में यह द्वीप पर्यटकों के लिए बन्द रहता है। अक्टूबर-नवम्बर के महीनों में उत्तरी-पूर्व दिशा में मानसून के कारण छुटपुट बारिश होती है।

6.6.2 इतिहास

लक्षद्वीप के प्रारंभिक इतिहास के लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। स्थानीय परम्पराओं के अनुसार इस द्वीप में पहली बस्तियां केरल राज्य के अंतिम राजा चेरामन पेरुमल के शासन काल में बसी थीं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि यहां सबसे पहले बसने वाले व्यक्ति हिन्दू धर्म के अनुयायी थे। आज भी इस द्वीप में हिन्दुओं के सामाजिक वर्ग-विभेद निश्चित रूप से दिखाई पड़ते हैं। किंवदंतियों के अनुसार यहां उपलब्ध अमीनी, कावारत्ती, एंड्रोथ तथा कालपेनी द्वीप में पहली मानव बस्तियां थी और बाद में इन द्वीपों में रहने वाले लोगों ने धीरे-धीरे अगात्ती, किलालतन, चेतलात तथा कदमत के द्वीपों की तरफ प्रयाण किया।

भारत में इस्लाम का आगमन 7वीं शताब्दी में बताया जाता है। इस द्वीप पर रहने वाली पूरी आबादी का इस्लाम धर्म में परिवर्तन कर दिये जाने के बाद भी इस द्वीप का शासन कुछ वर्षों तक हिन्दू राजा चिरक्काल के हाथ में रहा। 16वीं शताब्दी में इन द्वीपों का प्रशासनिक नियंत्रण चिरक्काल के राजाओं से निकलकर ट्रावनकोर के अरक्काल के मुस्लिम शासकों के हाथ में चला गया। अरक्काल शासकों का राज्य बर्बर और असहनीय था, अतः 1783 में अमीनी द्वीप के कुछ लोग हिम्मत कर मंगलौर जाकर मैसूर के राजा टीपू सुल्तान से मिले और उनसे अनुरोध किया कि वे अमीनी द्वीप का प्रशासनीय नियंत्रण व शासन अपने हाथ में ले लें।

टीपू सुल्तान अपने इस अभियान में सफल हुआ। 5 बड़े द्वीपों का प्रशासन टीपू सुल्तान के आधिपत्य में आ गया और शेष द्वीपों पर पूर्ववत् अरक्काल राजघराने का नियंत्रण रहा। 1799 में हुए श्रीरंगपट्टम के युद्ध के बाद चिरक्काल के राजा द्वारा प्रशासकीय कार्यों के लिए यह द्वीप ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधीन कर दिये गये। इस प्रकार इन द्वीपों पर अंग्रेजों का शासन प्रारम्भ हो गया।

इन द्वीपों को 1956 में केन्द्र शासित क्षेत्र बना दिया गया और 1973 में इसका नामकरण लक्षद्वीप किया गया। प्रशासनीय कार्यों के लिए सभी द्वीपों को मिलाकर चार तहसीलों वाला एक जिला बना दिया गया। इस द्वीप का प्रशासकीय मुख्यालय कावारती द्वीप में है। चूंकि

यह केन्द्र प्रशासित क्षेत्र है, अतः प्रशासक यहां का मुखिया होता है। प्रत्येक द्वीप में प्रजातांत्रिक प्रशासकीय व्यवस्था है जो आयलैंड कौंसिल के नाम से जानी जाती है। इसके सदस्य चुनकर आते हैं। समस्त केन्द्र शासित क्षेत्र के लिये एक राज्य समिति (Pradesh Council) है जिसके सदस्यों का चुनाव आयलैंड कौंसिल के चुने हुए सदस्यों में से होता है।

6.6.3 आकर्षण

1) **कावारत्तीः** वर्ष 1964 से कावारत्ती प्रशासकीय मुख्यालय तथा सबसे विकसित द्वीप भी रहा है। पूरे द्वीप में 52 मस्जिदें फैली हुई हैं जिसमें से उजरा मस्जिद सबसे सुंदर है। सुन्दर, शांत लगून विभिन्न जलक्रीड़ाओं, जलविहार तैराकी और गर्म रेतीले किनारों पर बदन सेकने के लिए एक आदर्श उपयुक्त स्थल है। समुद्र से निकलने वाली विभिन्न वस्तुओं का सुन्दर कलात्मक प्रदर्शन। संग्रहालय में तथा विभिन्न मछलियों का संग्रह मेरीन मछली घर में है। काँच के पर्दे की बनी नावें समुद्र के अन्दर के रोचक जीवन को देखने के लिए उपलब्ध हैं। नौकायन के लिए कयाक तथा पालवाली नावे किराये पर उपलब्ध होती हैं। समुद्र में तैरता रेस्तरां तथा तम्बू आवास व्यवस्था इस स्थान पर नये सम्मिलित किये गये आकर्षण हैं।

नाव का निचला हिस्सा काँच से बना होता है। नाव में बैठकर पानी के अंदर के जीवन को देखा जा सकता है। डाल्फिन गुफा केन्द्र, स्कूबा डाईविंग का अवसर प्रदान करता है और मंत्र मुग्ध कर देने वाली मूगें की माला आदि आकर्षण हैं।

2) **कलपेनीः** कलपेनी अपने सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों तथा दो छोटे उपद्वीप तिलक्कम, पित्ति तथा कालपेनी के उत्तर में स्थित एक निर्जन द्वीप चेरियम के लिए जाना जाता है। एक पतला सकरा लगून इन सबको अपने में लपेटे हुए है। कालपेनी द्वीप की मुख्य विशेषता वहां तूफानी लहरों से टकराने वाला पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी दिशा में एक बड़ा किनारा है। समुद्र के किनारों पर प्रवालों (coral) के ढेर पड़े हैं, ऐसा माना जाता है कि 1847 में एक भयंकर तूफान के समय यहां प्रवाल के बड़े-बड़े टुकड़े छूट गये थे। यह द्वीप काफी प्रगतिशील है, क्योंकि ऐसे समय में जबकि स्त्री शिक्षा को बुरी नजर से देखा जाता था तब वहां की लड़कियां स्कूलों में पढ़ने जाया करती थीं। यहां आप तैर सकते हैं, जलविहार कर सकते है पानी में पड़े पत्थरों (चट्टानों) के ऊपर चल सकते हैं या फिर कयाक, पालों वाली नावों या पैडल बोट्स के सहारे जलक्रीड़ा का आनन्द उठा सकते हैं। कैमेल बीच रिसोर्ट में कपड़े बदलने की सुविधा के साथ-साथ नहाने के लिए दो कुटीरें (huts) भी हैं। इसी द्वीप पर बैन्यन (बरगद) फैक्ट्री तथा लाईट हाउस तक की यात्रा को भी दिनचर्या में शामिल किया जा सकता है।

3) **मिनिकायः** मिनिकाय कोई 11 कि.मी. लम्बा है तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से यह दूसरा बड़ा द्वीप है। पहले नम्बर पर एन्ड्रोथ द्वीप आता है। यह द्वीप लक्षद्वीप के दक्षिण में अंतिम द्वीप है। और यहां सबसे बड़ा लगून है। उत्तरी दिशा में उपलब्ध विभिन्न द्वीपों की तुलना में मिनिकाय की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि काफी भिन्न है। इस द्वीप के अनेक व्यक्ति दुनिया के बड़े-बड़े देशों से आने वाले जहाजों में नाविकों के रूप में काम करते हैं। इस द्वीप में क्रमबद्ध ढंग से बने गांवों को ''अथिरिस'' कहा जाता है प्रत्येक गांव का अपना आंतरिक संगठन होता है जिसकी अगुवाई मोपेन करता है। इस द्वीप में 10 गांव है। मिनिकाय के लोक नृत्य 'लावा', 'धारा', 'दांत्रि', 'फूली' और 'बंदिया' है। जहाँ ''दोनो'' नामक रंगीन नौका का उपयोग गणमान्य व्यक्तियों को या वार्षिक पिकनिक मनाने के लिए किया जाता है। 1885 में एक लाइट हाउस के निर्माण के बाद से यह

द्वीप टूना मछली के शिकार का महत्वपूर्ण केन्द्र है। यहां पर्यटक गांवों में घूम सकते हैं और टूना मछली की डिब्बाबन्दी करने की फैक्ट्री भी देख सकते हैं या फिर घने नारियल के पेड़ों से घिरे बागीचों तथा तेज हवा से युक्त गांव के रास्तों पर उन्मुक्त घूम-फिर सकते हैं। यहां नहाने तथा कपड़े बदलने के लिए कुटीरें बनी हैं। अतः यहां तैरा जा सकता है तथा यहां समुद्र के तट पर पैदल घूमा जा सकता है। जलक्रीड़ा के लिए आवश्यक उपकरण यथा पालवाली नावें, कयाक तथा पैडल बोट्स किराये पर उपलब्ध हैं। यहां पर्यटकों के ठहरने के लिए पर्यटक कुटियाएं तथा 20 बिस्तरों वाला एक पर्यटक ग्रह उपलब्ध है।

4) **कादमतः** कादमत द्वीप लम्बा और सकरा जिसमें 8 कि.मी. लम्बा और चौड़ाई में 550 मीटर है। द्वीप के पश्चिमी ओर एक उथला लगून है जो विभिन्न प्रकार की जलक्रीड़ा संबंधी गतिविधियों के लिए सर्वथा उपयुक्त है। पूर्व में एक सकरा लगून भी है। इस द्वीप में दक्षिणी छोर पर सूर्य स्नान व धूप, सेंकने के लिए बड़े धुले सुन्दर समुद्री किनारे हैं। यहां पर्यटकों के रहने के लिए कुटीरें लगून की दिशा में नारियल के पेड़ों के झुरमुट के बीच बहुत उपयुक्त व सुहावनी जगह पर बनी हैं। यह स्थान शहर के कोलाहल से दूर छुट्टियां बिताने के लिए आदर्श स्थल है। कांच के पर्दे वाली नावें तथा जलक्रीड़ा से संबंधित विभिन्न प्रकार की नावें किराये पर उलब्ध हैं। पानी के खेल के प्रति उत्साही लोगों के लिए इस द्वीप में स्थित स्कूबा डाईविंग केन्द्र मुख्य आर्कषण का केन्द्र है।

5) **बंगारामः** बंगाराम द्वीप एक सम्पूर्ण निर्जन द्वीप की रोमांटिक परिवेश की परिकल्पना के साथ पूरी तरह न्याय करता है। इस द्वीप का आकार आँसू की बूंद की तरह है। इसके चारों ओर सुनहरी चमकदार क्रीम की तरह रेत की आभा फैली हुई है। इसे ''दुनिया के सर्वश्रेष्ठ गेटवे'' के बीच स्थान दिया गया है। मूंगे की चमकती एवं मोहित करती हुई चट्टाने पर्यटकों को चमत्कार की तरह लगती हैं। लक्षद्वीप के विभिन्न द्वीपों की तरह यहां भी नारियल के पेड़ों की हरियाली और झुंडों के कारण अत्यधिक गर्मी के समय भी यहाँ पूर्णतः निर्मल, ठंडा और मनोरम वातावरण रहता है। बंगाराम द्वीप के मध्य में स्थित झील में नीले आकाश तथा बाहरी हदों पर खड़े खजूर (पाम) के भव्य पेड़ों का प्रतिबिंब दिखाई देता है। बंगाराम द्वीप के समीप तीन छोटे निर्जन उपद्वीप हैं, जो एक दिन बिताने या पिकनिक मनाने के लिए बहुत उपयुक्त हैं। सारे द्वीप में एक ही बड़ा लगून बहता है जैसे मानों नीलाभ आभा की एक बड़ी तश्तरी हो। बंगाराम कई साहसी कारनामें, जैसे समुद्री खेल तैराकी, जलक्रीड़ा और गहरे समुद्र में मछली पकड़ने जैसा सुविधाएँ भी उपलब्ध कराता है। द्वीप में 60 बिस्तरों के समुद्री कुटिया तथा बहु-व्यंजन रेस्तरां है।

इस आरामगाह में अनेक जलीय खेलों की सुविधा है- कयाक, कैटामैरान, पालवाली नाव, गहरे पानी में गोता लगाना (स्नोरकेलिंग), गहरे समुद्र में मछली पकड़ना तथा गोताखोरी आदि। इस आरामगाह में गहरे पानी में गोता लगाने का खेल खेलने और सिखाने के लिए प्रशिक्षित गाइड तथा सभी आवश्यक उपकरण उपलब्ध हैं। अनुभवी गोताखोरों के अनुसार बंगाराम की पहाड़ियों से इस अछूते द्वीप में अनन्वेषित समुद्र के नीचे गहरे हिस्से में गोता लगाने की इतनी अच्छी सुविधा अन्यत्र कहीं देखने नहीं मिलती। पानी में कूदने के लिए स्थान पहाड़ियों से अन्यत्र हैं और वहां तक छोटी नावों में जाना पड़ता है। नौसिखियों के लिए भी समुद्र में तथा लगून में गोता लगाने की व्यवस्था भी यहां मौजूद है। गहरे समुद्र में मछली का शिकार करने के लिए यह एक आदर्श स्थान है। यहां बाराकुंड़ा, सेलफिश, यल्लोफिन, ट्रावेली और वाहू किस्म की

बहुत बड़े आकर व भार की मछलियां पकड़ी जा सकती हैं। अनुभवी नौका चालकों के साथ नावें भी यहां किराये पर मिलती हैं।

यह आरामगाह पर्यटकों के लिए साल भर खुली रहती है। मार्च से लेकर नवम्बर तक यहां पर्यटकों की भारी भीड़ रहती है। एक समय में यहां अधिकतम 30 जोड़ों को ठहराने की क्षमता है। अप्रैल से लेकर सितम्बर तक (अगस्त के महीने को छोड़कर) यह पूरा द्वीप आपके लिए खुला रहता है। बंगाराम द्वीपीय आरामगाह पहुँचने का प्रवेश द्वार कसीनों होटल, कोचीन है।

6.6.4 अधिसंरचना

बिजलीः आबादी वाले सभी द्वीपों तथा एक निर्जन द्वीप बंगाराम में छठी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत बिजली उपलब्ध करा दी गयी है। सारे द्वीपों में लगातार 24 घंटे डीजल से चलने वाले जेनरेटर्स से विद्युत उपलब्ध करायी जाती है। धीरे-धीरे यहां यह प्रयास किया जा रहा है कि इन जीवावशेषों से उत्पन्न शक्ति (fossil fuel) के स्थान पर सूर्य की गर्मी या हवा से बनायी जाने वाली बिजली से वाहनों को चलाया जा सके।

जल आपूर्ति : जहां तक स्वच्छ पेयजल का प्रश्न है, इन सभी द्वीपों में व कुछ गांवों में यह समस्या है। प्राकृतिक स्रोत के रूप में इन द्वीप समूहों में पानी की व्यवस्था नहीं है। मात्र जमीन के नीचे जमा वर्षा का पानी निकालना पड़ता है। चूंकि यहां गन्दगी को निकालने के लिए उपयुक्त व पर्याप्त सक्षम जल-मल निकासी व्यवस्था नहीं है, अतः धीरे-धीरे यहां जमीन के अन्दर जमा पानी दूषित होता जा रहा है। प्रायोगिक तौर पर कादमत द्वीप में कोई 100 परिवारों को जल वितरण के लिए पाइप लाइन की व्यवस्था की गयी है। 19 जनवरी 1983 को सूरज की किरणों से पानी शुद्ध करने का सयंत्र, जिसकी प्रतिदिन क्षमता 2000 लीटर है, बित्तरा द्वीप में लगाया गया है, ताकि द्वीप की कुल आबादी को पेयजल उपलब्ध कराया जा सके। सारे द्वीपों में पाइप लाइन के माध्यम से शुद्ध पानी उपलब्ध कराये जाने की योजना बनायी गयी है। जमीन के अन्दर तथा वर्षा से प्राप्त होने वाले जल को शुद्ध करके उपयोग में लाने की योजना भी बनायी गयी है। हालांकि पर्यटकों के लिए बोतलों में मिनरल वाटर बहुतायत से उपलब्ध है।

परिवहन एवं दूर संचार सुविधाएँ : 1958-59 तक ''ओड्मस'' (पानी के छोटे जहाज) कोचीन से लक्षद्वीप तथा अन्य छोटे द्वीपों व उपद्वीपों तक जाने के एकमात्र साधन थे। वर्ष 1962-63 तक चार्टर (किराये पर आरक्षित कर चलाये जाने वाले) जहाज मुख्य शहर कोचीन से द्वीपों तक तथा एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक चलने की व्यवस्था थी। परन्तु यह चार्टर जहाज वर्षा के महीनों में (मई से सितम्बर तक) नहीं चला करते थे। वर्ष 1970 में एक नया परिवर्तन आया जब एम.वी अमीनीदीवी नामक जहाज पूरे वर्ष भर चलाया जाने लगा। इससे वर्षा ऋतु में इन द्वीपों के मुख्य शहर से कट जाने की गंभीर विवशता समाप्त हो गयी। सरकार द्वारा अधिक विकासीय प्रयास तथा बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण यह लगने लगा कि कोचीन से इन द्वीपसमूहों तक आने-जाने के लिए दो बड़े जहाजों की उपलब्ध सेवा पर्याप्त नहीं है। केन्द्र शासित क्षेत्र के प्रशासन ने 1982 में एक और बड़ा जहाज एम.वी भारत सीमा प्राप्त किया है और आवागमन के लिए जुलाई 1982 से इसका चालन प्रारम्भ कर दिया गया। नये अतिरिक्त जहाज के आने से लक्षद्वीप समूह के बीच विभिन्न द्वीपों में आने जाने वाली परिवहन सुविधाओं में भी आशातीत सुधार आया है। विभिन्न द्वीपों के बीच नियमित आने-जाने के लिए एक अतिरिक्त जहाज लक्षद्वीप प्रशासन ने प्राप्त किया है। 658 सवारियों की क्षमता वाले नये जहाज टीपू सुल्तान का चालन सितम्बर 1988 से प्रारंभ किया गया।

यद्यपि विभिन्न द्वीपों के बीच आवागमन की सुविधा में व्यापक प्रगति हुई है, परन्तु द्वीपों में प्रवेश के लिए जहाजों से द्वीपों तक पहुंचने, सामान उतारने-चढ़ाने की कठिनाई यथावत है। यह सभी कार्य खुले समुद्र में करने पड़ते हैं। ऐसे कार्यों में कोई बड़ी दुर्घटना होने की पूरी संभावना बनी रहती है। मुख्य शहर कोचीन से अन्य द्वीपों पर आने-जाने के लिए हेलीकॉप्टर सेवा 31 जनवरी 1987 से प्रारंभ की गई हैं। इससे प्राकृतिक प्रकोपों या अन्य नाजुक स्थितियों में आने वाली कठिनाइयाँ कम हुई हैं। परिवहन सेवा में एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ जब वायुदूत हवाई सेवा से कोचीन तथा अगत्ती द्वीप के बीच हवाई सेवा प्रारंभ कर दी गयी। यह सेवा 15 अप्रैल, 1988 से प्रारंभ की गयी है। बित्तरा द्वीप को छोड़कर सभी द्वीपों में कम शक्ति वाले टी.वी. ट्रांसमीटर कार्यरत हैं।

कावारत्ती तथा मिनिकाय द्वीप में सेटेलाइट अर्थ स्टेशन लगा दिये गये हैं। इन्सेट 1 बी उपग्रह के लांच (launch) के कारण कोचीन से अन्य द्वीपों के बीच दूर संचार सेवा में काफी सुधार आया है। कावारत्ती द्वीप का शेष भारत से वायरलेस के माध्यम से सम्पर्क जुड़ गया है। मिनिकाय तथा कावारत्ती द्वीपों में एस.टी.डी. सुविधा उपलब्ध है। फैक्स की सुविधा के कारण इन द्वीपों का दिल्ली तथा कोचीन से सीधा सम्पर्क स्थापित हो गया है। अक्टूबर, 1982 में स्थानीय प्रशासन ने एक स्थानीय समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया था जो सभी द्वीपों में एक साथ प्रकाशित होता था। बाद में यह दैनिक समाचार पत्र साप्ताहिक कर दिया गया। समाचार पत्र में समाचारों का संकलन तथा सम्पादन कावारत्ती द्वीप में होता है, और फिर टैलीग्राम के माध्यम से अन्य द्वीपों में भेजा जाता है जहाँ उसका वांछित अनुवाद कर प्रकाशन का कार्य किया जाता है।

6.6.5 आवास व्यवस्था

लक्षद्वीप में आने वाले पर्यटकों की आवास व्यवस्था हेतु बढ़ती हुई मांग को देखते हुए स्थानीय प्रशासन ने काफी संख्या में पर्यटक कुटीरें (huts) निर्मित की हैं, ऊपर उल्लेखित पांचों द्वीपों में केन्द्रशासित क्षेत्र के प्रशासन द्वारा बनायी गयी पर्यटक कुटीरों के अतिरिक्त कोई अन्य आवास व्यवस्था नहीं है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक द्वीप में पर्यटक सूचना केन्द्र परिसर में उपलब्ध एकमात्र रेस्तरां के अलावा अन्य कोई ढाबा अथवा रेस्तरां उपलब्ध नहीं है। प्रत्येक द्वीप में कुछ ढाबे हैं जहाँ सिर्फ स्थानीय भोजन की प्रदान किया जाता है। अतः एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक ही जाने वाली यात्रा के लिए समुचित डिब्बा बन्द खाना ले जाना ही उपयुक्त है।

प्रत्येक द्वीप पर पर्यटक कुटीरें समुद्र तट पर सर्वश्रेष्ठ स्थानों पर स्थित हैं। प्रत्येक कुटीरों में एक या दो कमरे हैं। प्रत्येक कमरे में दो-दो बिस्तर, मच्छरदानी, पंखे तथा कमरों से जुड़े हुए बाथरूम हैं। खाना समुद्र तट पर ही परोसा व खिलाया जाता है। प्रत्येक कमरे में अतिरिक्त पलंग उपलब्ध कराने का भी प्रावधान है। पर्यटक कुटीरों तथा पूरे द्वीप समूह में बिजली, डीजल द्वारा चालित जेनरेटरों से प्राप्त की जाती है।

स्थानीय भोजन शैली प्रायः तीखे मसालों तथा नारियल के अधिक प्रयोग के कारण केरल के खान-पान से बहुत मिलती-जुलती है। नाश्ते में आपको यहां इडली अथवा सब्जी-पूरी मिल सकती है। जबकि दोपहर और रात्रि के भोजन में चावल, सूखी सब्जी, सांभर तथा शोरबे वाली मछली, चिकन व मटन मिल सकता है। आपकी मांग पर सादा शाकाहारी भोजन तत्काल प्राप्त हो सकता है। कच्चा नारियल और नारियल पानी मिनरल वाटर से अधिक सरलता व अधिकता से हर समय उपलब्ध रहता है। इन द्वीप समूहों पर काम में लायी जाने वाली सभी भोज्य सामग्री डिब्बेबन्द चीजें तथा रोजमर्रा के काम में आने वाली सभी सामग्री बाहर से मंगवानी पड़ती हैं।

6.6.6 वहाँ कैसे पहुँचा जाये?

एयर इंडिया कोची से अगत्ती के बीच एक सप्ताह में 6 नियमित उड़ाने संचालित करती है। हवाई पट्टी केवल अगत्ती द्वीप में ही है। उच्चगति की नाव बंगाराम के लिए उपलब्ध है। अक्टूबर से मई महीने के बीच में अगत्ती से कावारत्ती तथा कड़मत द्वीप के लिए भी उच्च गति की नाव चलती है। मानसून के मौसम में अगत्ती से अन्य द्वीपों के लिए हेलीकॉप्टर सेवा उपलब्ध है (हेलीकॉप्टर की उपलब्धता रहने पर) कोचीन से अगत्ती के लिए उड़ाने डेढ़ घंटे का समय लेती है।

जहाज द्वारा– सात यात्रियों के सीट की बैठक क्षमता वाले जहाज एम.वी. कावारत्ती, एम. पी. अरेबियन सी, एम. वी. लक्ष्यद्वीप सी, एम. वी. लागून, एम. वी. कोरल्स, एम. वी. लक्ष्यद्वीप के बीच चलते हैं। समुद्री यात्रा 14-18 घंटे में पूरी होती है वह भी इस पर निर्भर करता है कि आपका गंतव्य स्थान कौन सा है। सीटों की विभिन्न श्रेणियां हैं जिनमें एसी. प्रथम श्रेणी जिसमें एक केबिन में दो बर्थ होती है। एसी द्वितीय श्रेणी के तथा बंक श्रेणी के अंतर्गत ए. सी. सीटें भी यात्रियों के लिए उपलब्ध रहती है। एक चिकित्सक हमेशा यात्रा के दौरान मौजूद रहता है जो बुलाने पर उपलब्ध हो जाता है। एम. वी. अमीनी दीवी और एम. वी. मिनिकॉय आरामदायक एम.सी. सीटों का प्रस्ताव देती है, जो रात की यात्रा के लिए ठीक रहता है। खुले मौसम में उच्चगति वाले जहाज भी द्वीपों के बीच चलाए जाते हैं।

6.6.7 पर्यटकों के लिए सुझाव

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि लक्षद्वीप भारत का एकमात्र प्रवाल द्वीप है। यह द्वीप स्वयं प्रवालों से निर्मित है, और चारों ओर लगून खाड़ी में (जहां समुद्र का पानी अन्दर आकर जमा हो गया है) इन सुन्दर प्रवालों से बनी पथरीली दीवार को देखा जा सकता है। स्मृति चिन्ह के रूप में वहां उपलब्ध प्रवालों के ढेर में से एक प्रवाल भी उठा लाने का लोभ तो रहता ही है परन्तु यह पूर्णतः अवैधानिक है जिसके लिए कड़ा दंड या भारी जुर्माना हो सकता है। यह इसलिए कि ऐसा करने पर आप वहां के पर्यावरण संतुलन को भारी क्षति पहुंचा सकते हैं। नारियल तोड़ना मना है क्योंकि नारियल के पेड़ निजी मालिकों के स्वामित्व में हैं। बढ़िया प्रकार के प्रसाधन तथा सिगरेट हो सकता है आपको वहाँ उपलब्ध न हो सके और न ही मलयालम भाषा को छोड़कर अन्य भाषा में किसी प्रकार की किताबें तथा पत्रिकाएं ही मिल पाएं। ऊष्णकटिबन्धीय मौसम के अनुसार आवश्यक कपड़ों से सारे वर्ष काम चल सकता है। अक्टूबर-नवम्बर के महीनों में पानी से बचने के लिए एक बरसाती उपयोगी हो सकती है। लक्षद्वीप पहुंचने के पहले जहाज पर तथा सिर्फ बंगाराम द्वीप में शराब पीने की अनुमति है शेष अन्य द्वीपों पर शराब सेवन पर प्रतिबंध है। जहरीली दवाओं और नशीले पदार्थों को ले जाना दंडनीय अपराध है। लक्षद्वीप पहुंचने वाले सभी पर्यटकों को अनुमति प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित जानकारी अनिवार्य रूप से देनी पड़ती है :

विदेशी पर्यटकः नाम, पता, जन्म का स्थान, जन्म तिथि, नागरिकता, पासपोर्ट नम्बर, जारी होने की तिथि तथा स्थान एवं पासपोर्ट समाप्त होने की अवधि।

भारतीय पर्यटकः नाम, पता, जन्म तिथि तथा जन्म स्थान।

6.7 सारांश

इस इकाई में हमने सत्रहवीं शताब्दी से आरामगाहों की उत्पत्ति और विकास के संबंध में पढ़ा तथा समुद्रतटीय और द्वीपीय आरामगाहों की परिकल्पना के संबंध में जाना। सर्वप्रथम स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से विकसित स्पा आरामगाहें विशिष्ट आरामगाहों के रूप में विकसित

हुई और बाद में समुद्रतटीय आरामगाहें विकसित हुई। आरामगाह मुख्यतः अवकाश बिताने के स्थल होते हैं जहां जन कोलाहल से दूर, शांत वातावरण में मनोरंजन तथा विभिन्न प्रकार के खेलों की सुविधा से युक्त उचित आवासीय व्यवस्था होती है। साथ ही ये आरामगाहें पर्यावरण के सौन्दर्य को यथाशक्ति बनाये रखने तथा उनमें उभार लाने में भी सहयोगी होती हैं।

समुद्रतटीय पर्यटन और द्वीपीय पर्यटन अवकाश पर्यटन के दो प्रमुख भाग हैं और वे परस्पर काफी हद तक एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। समुद्रतटीय और द्वीपीय आरामगाहों के विकास में अनेक बाधाएं, रुकावटें और समस्याएं आती हैं। एक आरामगाह के निर्माण और विकास में मुख्यतः इन बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए-आरामगाह का आकार तथा क्षेत्रफल, वांछित अधिसंरचना के प्रकार और शैली, आरामगाह में पर्यटकों को समायोजित करने की क्षमता, प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं, प्रबंधकों की उपलब्धता, स्थानीय सहयोग, पर्यटन विकास के प्रति स्थानीय निवासियों का नजरिया तथा उनके लिए रोजगार के अवसर आदि।

6.8 शब्दावली

कैटनारब : लकड़ी के बड़े लम्बे कम चौड़े तख्ते को बांधकर बनाया गया तख्ता।

कयाक : जलक्रीड़ा में उपयोग में लाने वाली एक विशेष प्रकार की हल्की नाव।

लगून (खाड़ी) : समुद्र का वह छोटा सा हिस्सा जो रेत के कारण या प्रवाल दीवारों के कारण समुद्र से अलग हो जाये।

आरामगाह (रिसोर्ट) : वह पर्यटक स्थल जहां एक से अधिक प्रकार के आकर्षण व सुविधा उपलब्ध हो, जहां पर्यटक अपना अवकाश व्यतीत कर सकें।

स्नोरकेलिंग : पानी के अन्दर तैरने के लिए कृत्रिम सांस लेने हेतु काम में लाये जाने वाले विशेष उपकरण।

स्पा : प्राकृतिक औषधियुक्त झरनों वाले स्थल जहां लोग स्वास्थ्य लाभ के लिए ठहरते हैं।

6.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उपभाग 6.3.1 के अनुच्छेद 1 और 3 देखें।

2) उपभाग 6.3.1 का अनुच्छेद 4 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 6.1 को देखें।

2) भाग 6.2 के अनुच्छेद 3 और 4 को देखें।

3) भाग 6.2 का अनुच्छेद 5 देखें।

बोध प्रश्न 3

1) आपको समुद्र तटों की सुन्दरता, जलीय खेल योग आदि की सुविधाएँ प्रदान करनी चाहिए। देखें 6.5.2

2) उपभाग 6.5.5 देखें।

3) उपभाग 6.5.3 का अध्ययन करें तथा इसमें बताये स्थानों तथा वहां उपलब्ध पर्यटन आकर्षणों को अपने उत्तर का आधार बनायें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इस खंड के लिए गतिविधियां

गतिविधि-1

निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान (250 शब्दों में) रखते हुए अपने शहर के निकटतम तीर्थ केंद्र पर एक संक्षिप्त नोट तैयार करें।

1) स्थान का धार्मिक महत्व

2) स्थान का इतिहास

3) पहुँच और आराम की सुविधाएँ

गतिविधि -2

अपने शहर के 10 तीर्थयात्रियों के समूह के लिए जो वैष्णों देवी जाना चाहते हैं, निम्नलिखित जानकारी के साथ एक विस्तृत दौरे का कार्यक्रम तैयार करें।

1) विभिन्न स्थानों पर प्रस्थान और आगमन का समय

2) यात्रा के विभिनन तरीके

3) ज़रूरत पड़ने पर विभिन्न स्थानों पर आवास

4) भोजन की व्यवस्था

गतिविधि-3

निम्नलिखित जानकारी देते हुए अपने शहर में होने वाले महत्वपूर्ण त्योहारों का एक चार्ट बनाएँ

1) वर्ष का समय जब उन्हें आयोजित किया जाता है।

2) संक्षिप्त इतिहास

3) उत्सव का विवरण

गतिविधि - 4

भारत का मानचित्र बनाएँ। पूर्व और पश्चिम तट पर प्रसिद्ध समुद्रों तटों को चिन्हित करें।

इस खंड के लिए कुछ उपयोग पुस्तकें

पी.एम.क्यूरी - अजमेर के श्राइन व मीनाल दिन चिश्ती का पंथ नई दिल्ली 1992,

बनी कांत काकती - माँ कामाख्या देवी, गोहाटी

सूर्या जोशी - भारत के कला प्रदर्शन के पहलू मार्ग प्रकाशन, 1993

रॉबर्ट बेयर्ड़ (संपादन) - आधुनिक भारत में धर्म, नई दिल्ली 1994

एलेक्स नॉर्मन, (संपादन) - धर्म, तीर्थ और पर्यटन, 2015

थॉमस बैरी - भारत के धर्म, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1992

NOTES

NOTES